**सुन ब्रज के ठगैल मेरी छाँड़ दै रे गैल,**
**ऐसी होरी तेरी कैसी होरी हाय मची ||**
अबही तो मैं ब्रज में आई
या ब्रज रीति मैं जान न पाई
तोते जान ना पहिचान मैं हूँ नारी अनजान,
कैसे बीच डगर में फाग रची |
मैं हूँ बेटी बड़े घरन की
नयी ब्याहुली मैं लाजन की
मेरी चूनर छापेदार मेरी सारी जरतार,
हटो छाँड़ो लंगराई मोहे नांय जची |
मोहन नैनन तीर चलावै
घूँघट चीर जिया बिंध जावै
मेरे नैनन तीर ऐसे लागे समसीर,
हटो चल्यो नहिं जावै मेरी कमर लची ||

**अनुक्रमणिका**


विषय-सूची — पृष्ठ-संख्या

०१ 'पद्मश्री' से विभूषित हुए ब्रजविभूति विरक्त संत पूज्यश्री रमेश बाबा जी महाराज .....०३
०२. पूज्यश्री बाबा महाराज द्वार अपनी माँ को लिखा गया पत्र .....१२
०३. सच्चे सुहृद संतजन.....१६
०४. भगवद्रस-वर्षण से भवाग्नि-शमन.....१८
०५. सबसे सरल-सरस 'श्रीभगवन्नाम' .....२०
०६ श्रीधाम-संजीवनी 'नृत्याराधना.....२२
०७.भाव-भक्ति से सर्वसाधनसिद्धि.....२४
०८. भावना ही विशुद्ध भक्ति.....२६
०९. कीर्तन-निष्ठ 'श्रीहिम्मतदासजी.....२८
१०. गौ-अपराध का परिणाम .....३२



**संरक्षक- श्रीराधामानबिहारीलाल**

प्रकाशक – राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर सेवा संस्थान, गह्वरवन , बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)

(Website :www.maanmandir.org ) (E-mail :ms@maanmandir.org)

mob. : 9927338666, 9837679558


श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप बाबाश्री के प्रातःकालीन सत्संग का ८:३० से ९:३० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ७:३० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं |

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें | हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है –

**सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ | जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ||**

(श्रीमद्भागवत३/७/४१)

अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंशके बराबर भी नहीं हो सकता |

# प्रकाशकीय

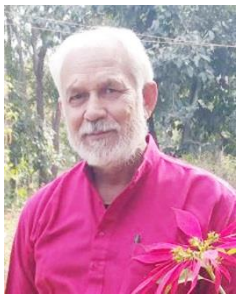

परिस्थितियों के पहाड़ या सम्पत्तियों के सागर की सुलभता परन्तु दोनों में समरसता यह देखने का सुअवसर यदा-कदा ही मिलता है | गुणातीत महापुरुषों के जीवन से ही यह सीखा जा सकता है - न खाने का पता और न तन ढकने की चाह, निर्जन वन- उपवनों में बस एक ही इच्छा कि अपने प्राण-प्रियतम श्रीराधामाधव की नित्य केलि विलास की स्थली ब्रज-वसुंधरा में नित्य निवास का सौभाग्य कैसे प्राप्त हो | अपनी विधवा माँ के एकमात्र आश्रय भगवदाश्रय में उन्हें छोड़कर **"मरना तेरी गली में, जीना तेरी गली में"** की धारणा को मूर्तरूप देने निकल पड़े तो पीछे मुड़कर नहीं देखा, ऐसे महापुरुष पूज्य श्रीरमेशबाबा ने ६५ वर्षों में अखण्ड ब्रजवास करते हुए ब्रज की निष्काम सेवा का व्रत लिया तो कभी किसी से अपेक्षा नहीं किया |

**निरपेक्षं मुनिं शान्तं निर्वैरं समदर्शनम् । अनुव्रजाम्यहं नित्यं पूयेयेत्यङ्घ्रिरेणुभिः ॥** (भा. 11/14/16)

इन समस्त दैवीय गुणों की साक्षात् प्रतिमूर्ति बाबाश्री ने ब्रज और ब्रजवासियों की आराधना में अपनी साधना को मूर्तरूप दिया | मान-सम्मान, प्रतिष्ठा की कामना से बहुत दूर अमानी रहकर सदा ब्रजवासियों को मान दिया | ब्रज-सेवा, गौ-सेवा एवं भगवन्नाम-सेवा से जिन्होंने न केवल ब्रज का हित अपितु सम्पूर्ण जगत को पावन बनाया है क्योंकि यह सृष्टि भगवदाराधन पर ही टिकी हुई है | आराधन-तत्पर महापुरुष इतने विरक्त होते हैं कि वे भगवद्-सामीप्य तक की इच्छा नहीं रखते फिर किसी सांसारिक उपलब्धि से क्या सरोकार ? राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों के लिए लोग कितने प्रयासरत होते हैं तब कहीं उन्हें वह मिलता है | बाबा महाराज को भी भारत सरकार ने 'पद्मश्री' से विभूषित किया परन्तु सोचो क्या यह इतने बड़े महापुरुष का सम्मान है ! भारतरत्न भी दिया जाए तो वह उपाधि ही ऐसे सत्पुरुषों से अलंकृत होती है |

**भवद्विधा भागवतास्तीर्थभूताः स्वयं विभो । तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तःस्थेन गदाभृता ॥** (भा. 1/13/10)

एक साक्षात्कार में बाबाश्री ने यह व्यक्त भी कर दिया कि इस सम्मान की प्राप्ति से हमें क्या लाभ | पद्मश्री विभूषित पूज्य श्रीबाबामहाराज की तो सबसे बड़ी यही उपलब्धि है कि हर जीव भगवान् की ओर अग्रसर हो | बाबा महाराज ऐसी कृपा करें ताकि हम सभी बाबा महाराज की निष्किंचन सेवा से प्रेरणा लेकर अपने समाज को निष्काम सेवक बना सकें |

राधाकांत शास्त्री

व्यस्थापक, मानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

## 'पद्मश्री' से विभूषित हुए ब्रजविभूति विरक्त संत पूज्यश्री रमेशबाबाजी महाराज

संकलन/लेखन- डॉ.रामजीलाल जी शास्त्री, बी.एस.सी.,एम.ए.द्वय (हिंदी,संस्कृत)
बी.एड.आचार्य (साहित्य),पी.एच.डी., अध्यक्ष- मान मन्दिर सेवा संस्थान,बरसाना

अनन्त वासनाओं से ग्रसित प्राणी वासनाओं से कभी तृप्त हो ही नहीं सकता अपितु उल्टे अन्धकार को ही प्राप्त होता है | संसार में जीवों के परम कल्याण का, जीवन को सार्थक बनाने का 'प्रभु की शरणागति' के अलावा कोई दूसरा सरल उपाय नहीं है | **जो सुख होत गोपालहिं गाये | सो सुख होत न जप, तप कीन्हे, कोटिक तीरथ न्हाये ||** पुनश्च – **रस सागर गोविन्द नाम है रसना जो तू गाये | तो जड़ जीवन जन्म की तेरी बिगरी हू बन जाये || जनम-जनम की जाये मलिनता उज्ज्वलता आ जाये ||** (पूज्य श्री रमेश बाबा महाराज द्वारा रचित-पद, बरसाना पुस्तक से संग्रहीत) पूज्य महाराज जी का विश्वास है कि प्रभु के नाम-संकीर्तन में अनन्त शक्ति है, समग्र विश्व में सुख-शान्ति की प्राप्ति, दुःखों से निवृत्ति, चित्त की शुद्धि केवल भगवन्नाम-कीर्तन से व उनकी लीलाओं का गान करने से ही सम्भव है | यही सरलतम व सर्वोच्च साधना व आराधना है | इसी आराधना के बल से असम्भव कार्य संभव हुए | सन्१९५४ में पूज्य महाराज जी जब ब्रज में आये, उन्होंने ब्रज का नाश ही देखा, वनों को काटा जा रहा था, देवतुल्य पर्वतों का खनन होता था | धीरे-धीरे यह विनाश का क्रम बढ़ता गया और अपनी चरम अवस्था पर पहुँच गया | पर्वतों को डायनामाइट से उड़ाया जा रहा था | पूज्य महाराज जी ब्रज के बाहर जाते नहीं हैं | सामूहिक आराधना का क्रम बढ़ा और उसी आराधना के फलस्वरूप विजय प्राप्त हुई | ब्रज में लगभग १ लाख पेड़ लगाये गये, पहाड़ों का खनन रुका, भगवन्नाम का प्रचार बढ़ा | कुछ साधु-सन्त व भक्तों ने महाराज जी से निवेदन

किया कि आप ब्रज के बाहर जाते नहीं हैं, हमें ब्रज चौरासी कोस की यात्रा ही करा दीजिए | बाबा महाराज राजी हो गये इस शर्त पर कि यात्रा में कोई शुल्क नहीं होगा | अपनी ओर से श्रद्धा से कोई सेवा करना चाहे वह स्वीकार होगी | वह सेवा चाहे १ रुपये की हो चाहे हजार की अथवा लाख रुपये की हो, स्वीकार होगी परन्तु यात्रा में शुल्क का प्रतिबन्ध नहीं होगा, पूर्णतः यात्रा निःशुल्क रहेगी | सभी ने स्वीकार कर लिया | १९८८ मई के अन्तिम सप्ताह में यात्रा शुरू हुई, उसमें अनेकों चमत्कारिक घटनायें घटीं | एक मृत महिला कीर्तन के प्रभाव से जीवित हो गयी | १९९३ से यात्रा दिवाली के आस-पास अक्टूबर में प्रारम्भ हुयी | १९९५ में होली के बाद यात्रा शुरू की लेकिन वह समय किसानों को फसल के कारण अनुकूल नहीं था, यात्रा रुकने को खेत खाली भी नहीं रहते थे | १९९६ से यात्रा नियमित रूप से आश्विनी मास शुक्ल पक्ष त्रयोदशी से प्रारम्भ होती है और ४० दिन तक चलती है, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सप्तमी तक | सर्वप्रथम १९८८ की यात्रा में लगभग सवा दौ सौ आदमी थे, आज उस यात्रा में लगभग १६-१७ हजार यात्री रहते हैं और वही आदर्श चल रहा है | यात्रा सभी के लिए निःशुल्क है | करोड़ों रुपये यात्रा में खर्च हो जाते हैं,

किसी से माँगा नहीं जाता | यात्रा में अखण्ड भगवन्नाम संकीर्तन चलता-रहता है चौबीसों घंटे | इसी नाम संकीर्तन के बल से कभी कमी नहीं आती है | महाराज जी अपनी माँ के इकलौते बेटे थे, पिताजी श्री बल्देव प्रसाद शुक्ल आई. जी. आफिस में police suprintendent थे और १९४२ के आन्दोलन में उन्होंने नौकरी से त्याग पत्र दे दिया था | मदनमोहन मालवीय जी इनका बड़ा सम्मान करते थे, इन्हें शुक्ल भगवान् कहा जाता था, ये बड़े उदार थे, जीते जी इन्होंने गंगा के किनारे की सैकड़ों एकड़ जमीन दान कर दी थी | रामेश्वर भगवान् की आराधना के फलस्वरूप पूज्य महाराज जी का जन्म हुआ था और इसी कारण इनका नाम रामेश्वर प्रसाद शुक्ल रखा गया था | परिवार में प्यार से इनको रमेश कहते थे और आज भी वही नाम प्रचलित है | १९५४ में किसी को बिना बताये ये ब्रज में चले आये और शुरू में ही मान मन्दिर आकर रुके, जो खण्डहर था, चोर डाकुओं का अड्डा था | कुछ वर्षों के बाद धीरे-धीरे कीर्तन शुरु हुआ | ५-७ साल बाद माता जी को पता लगा, वह खोजतीं-खोजतीं यहाँ आईं, आतीं मिलकर चलीं जातीं | १९७२ से माता जी भी ३५ साल लगातार गह्वरवन में नीचे कुटी पर रहीं, महाराज जी ऊपर मान मन्दिर पर रहते थे | २००७ में माता जी गोलोकवासी हो गयीं | उनकी स्मृति में एक गौशाला खोली गई, जिसका नाम 'माताजी गौशाला' रखा गया | उस समय मात्र ३-४ गायें थीं | पूज्य महाराज जी ने भूमि पूजन के समय कहा था कि यदि तुम लोग श्रद्धा से और ईमानदारी से सेवा करोगे तो यह विश्व की प्रसिद्ध गौशाला होगी | महापुरुषों के मुख से जो वचन निकल जाता है उसे ठाकुर जी पूरा करते हैं | अभी गौशाला को १२ वर्ष भी नहीं हुए हैं, आज उसमें ५५ हजार से भी ज्यादा गाये हैं, सबकी मातृवत् सेवा होती है, किसी से माँगना नहीं पड़ता | केवल नित्य निष्काम आराधना होती है | लगभग १५० बालिकायें, १०० गुरुकुल के बालक व ६०-७० साधु शाम को ६ से ७:३० बजे तक आराधना करते हैं रसमण्डप में | जो यू ट्यूब पर w.w.w maanmandir.org के माध्यम से प्रतिदिन लाइव देखा जा सकता है | जिसे ब्रजवासी लोग रासलीला कहते हैं, कुछ भक्त लोग आराधना कहते हैं | हाथरस, अलीगढ़, फरीदाबाद, बल्लभगढ़, दिल्ली, पंजाब आदि स्थलों से शनिवार, रविवार को कई बसों से श्रद्धालुजन इस सत्संग को देखने आते हैं और सत्संग के बाद रसमन्दिर में भोजन करने के बाद चले जाते हैं | गत वर्ष २४ मार्च बरसाना की लठामार होली के अवसर पर उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री आदरणीय आदित्यनाथ योगी जी हरियाणा के मुख्यमंत्री खट्टर जी के साथ माता जी गौशाला में पधारे थे | उन्होंने माता जी गौशाला में गौओं का दर्शन किया, बड़े प्रसन्न हुए | गायों का दर्शन करके योगी जी ने प्रसन्नता के साथ कहा कि मेरे प्रदेश में ऐसी गौशाला है, ऐसी तो पूरे भारत वर्ष में कहीं नहीं है | श्री योगी जी ने मुक्त कण्ठ से महाराज जी की प्रशंसा करते हुए कहा कि अब आश्रमों में सभी साधु-संतों को श्री रमेश बाबा से प्रेरणा लेकर के गौसेवा करनी चाहिए | योगी जी ने माता जी गौशाला में गायों की इतनी बड़ी संख्या व सेवा देखकर गद्गद् कण्ठ से महाराज जी की प्रशंसा की और गौसेवा के लिए लोगों को प्रेरित किया | भारत सरकार के गृहसचिव के यहाँ से Rajiv Gauba I.A.S. द्वारा दिनांक २५ जनवरी २०१९ के D.U. NO. 1/2/2019 public के अनुसार राष्ट्रपति महोदय द्वारा पूज्य श्री रमेश बाबाजी महाराज को पद्मश्री से सम्मानित करने का confirmation letter प्राप्त हुआ है जो कि साथ में संलग्न किया जा रहा है -

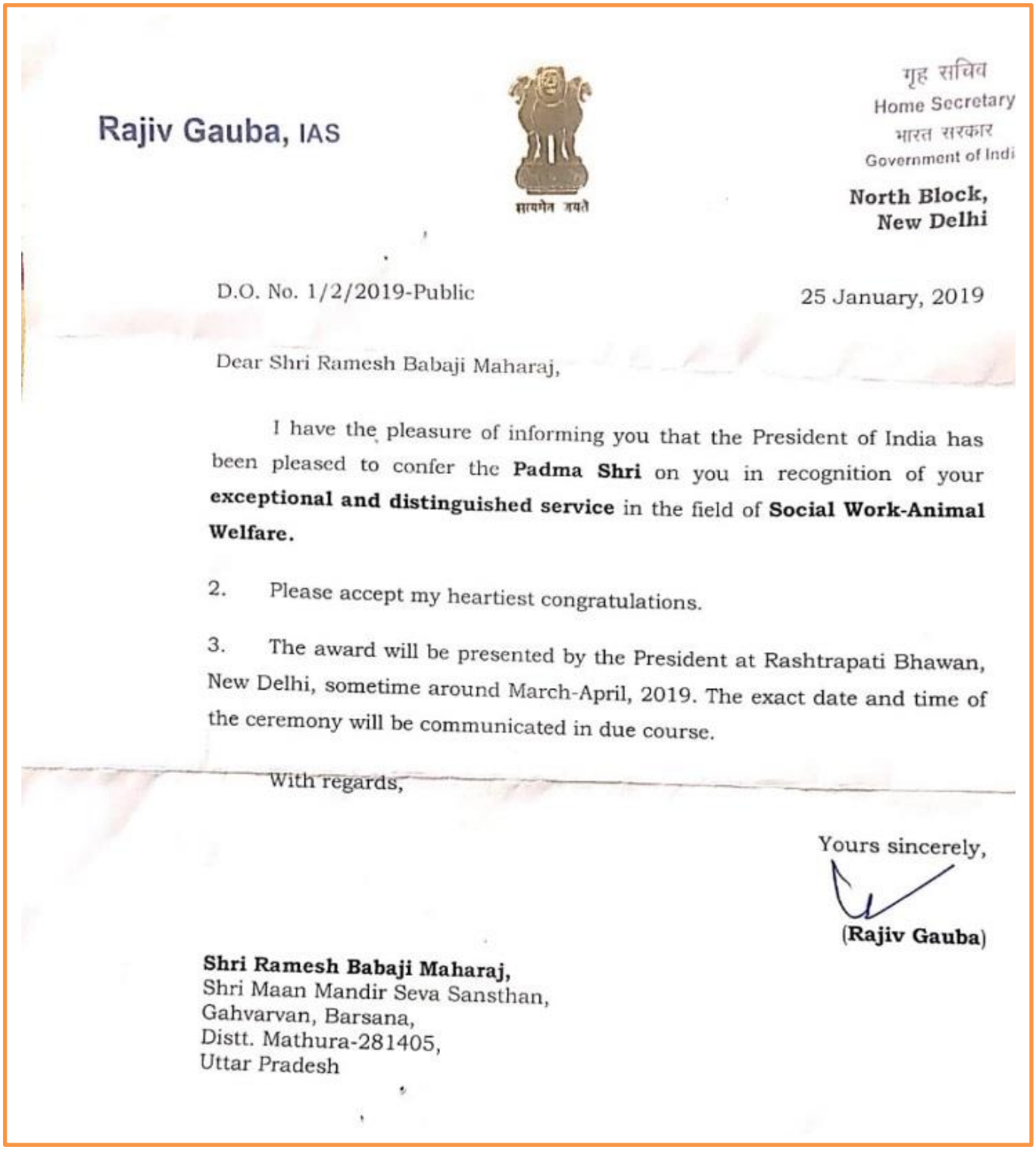

Rajiv Gauba, IAS

सत्यमेव जयते

गृह सचिव
Home Secretary
भारत सरकार
Government of Indi

**North Block,**
**New Delhi**

D.O. No. 1/2/2019-Public

25 January, 2019

Dear Shri Ramesh Babaji Maharaj,

I have the pleasure of informing you that the President of India has been pleased to confer the **Padma Shri** on you in recognition of your **exceptional and distinguished service** in the field of **Social Work-Animal Welfare.**

2. Please accept my heartiest congratulations.

3. The award will be presented by the President at Rashtrapati Bhawan, New Delhi, sometime around March-April, 2019. The exact date and time of the ceremony will be communicated in due course.

With regards,

Yours sincerely,

(Rajiv Gauba)

**Shri Ramesh Babaji Maharaj,**
Shri Maan Mandir Seva Sansthan,
Gahvarvan, Barsana,
Distt. Mathura-281405,
Uttar Pradesh

विशेष सूचना-'मान मंदिर कला अकादमी' द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी रंगीली होली के उत्सव पर दिनांक १४ मार्च शुक्रवार की रात्रि में समय ८ बजे से भक्त-चरित्रों की श्रृखंला के अंतर्गत इस बार **सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र** नाटिका का प्रस्तुतीकरण किया जाएगा | दूसरे दिन रंगीली होली के उत्सव पर (दिनांक १५/०३/२०१९) होली के रसिया गायन/नृत्य का सुन्दर आयोजन होगा | सभी पाठक बंधु भक्तवृन्द अवश्य पधारकर अपने जीवन को धन्य बनायें।

इसी सन्दर्भ में भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री अमित शाह जी (दि. १ फरवरी २०१९) द्वारा भी एक प्राप्त हुआ है | (जिसकी प्रतिलिपि मुख्य पृष्ठ पर अंकित की गयी है)

पूज्य महाराज जी को पद्म श्री से सम्मानित करने की घोषणा के बाद मीडिया के विभिन्न चैनलों के लोग पूज्य महाराज जी का इंटरव्यू लेने आये | प्रेसवालों ने प्रश्न किया कि पद्मश्री से सम्मानित होने पर आप कैसा महसूस कर रहे हैं | पूज्य महाराज जी ने उनसे कहा - "यह सम्मान हमारे तो किसी काम का है नहीं यदि सरकार इसकी जगह गायों की सेवा और यमुना जी का कार्य करती तो कुछ जनता जनार्दन की सच्ची सेवा होती |"

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि वर्तमान में सरकार में ऐसे योग्य पदाधिकारी हैं जो निःस्पृह विरक्त सन्तों की गरिमा को समझते हैं और उन्हें खुले दिल से सम्मान करते हैं | ऐसे विरक्त निःस्पृह निष्काम संतों का सम्मान करने वाले अधिकारी भी विरले ही होते हैं | पूज्य महाराज जी के लिए तो भारतरत्न की उपाधि भी उनकी गरिमा के आगे छोटी पड़ेगी |

ब्रजविभूति विरक्त सन्त परम पूज्य पद्मश्री रमेश बाबाजी महाराज की प्रशस्ति में अखिल भारतवर्षीय धर्मसंघ के परमाध्यक्ष एवं रामराज्य परिषद्-भारत के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री त्रयम्बकेश्वर चैतन्य जी महाराज (धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्रीजी महाराज के कृपापात्र) ने दि. १८/२/२०१९ बाबा रमेश पंचकं शीर्षक से संस्कृत में छन्दोबद्ध कृति रूप में भेजा है –

**(१)**
**श्री रमेशबाबाजी पंचकम्**

**ब्रजेन्द्रनंदनंदनप्रसादपंथराधकं,**
**महामुनीन्द्रवन्द्यवृंदवंद्यदेवसाधकम् ।**
**सुधासमुद्रसारतत्वशोभितं वरांवरं,**
**रमेशसंज्ञकं मुनिं नतोऽस्म्यहं निरंतरम् ।।1**

**ब्रजेश्वरीसुकीर्तिजानिकुंजमध्यवासिनं,**
**सदैव मानमंदिरप्रवास वासवर्धितम् ।**
**विभावभव्यताविदं सुशीतलं निशाकरं,**
**रमेशसंज्ञकं मुनिं नतोऽस्म्यहं निरंतरम् ।।2**

**गवां कुलै: सुसंवृतं मयूरवृंदनंदितं,**
**विरंचिपर्वताग्रभागवासिनं हि सद्गुरुम् ।**
**ब्रजांगनासमूहराशिरंजितं हृदंतरं,**
**रमेशसंज्ञकं मुनिं नतोऽस्म्यहं निरंतरम् ।।3**

**प्रयागराजतीर्थराजसंगमाच्च ह्यागतं,**
**ब्रजांगणप्रभाप्रमुग्धधेनुदुग्धलालितम् ।**
**विरागभक्तिबोधशोधबोधकं प्रभाकरं,**
**रमेशसंज्ञकं मुनिं नतोऽस्म्यहं निरंतरम् ।।4**

**सरोवराद्रिकुण्डकुंजतत्वबोधसंयुतं,**
**अनन्यरागभक्तिभावरक्षितं विलक्षणम् ।**
**व्रजेतिहासरासभासभासकं मुनीश्वरं,**
**रमेशसंज्ञकं मुनिं नतोऽस्म्यहं निरंतरम् ।।5**

**सद्भाववर्धकं नित्यं, प्रेमानंदमवाप्तये ।**
**करोति त्र्यम्बक:प्रेम्णा, बाबारमेशपंचकम् ।।**

**(२)**

**गुरवे प्रणुमो गुरवे प्रणुमो ।**
**गुरवे प्रणुमो गुरवे प्रणुम: ॥**

**ब्रज-मंडल-मंडन-दक्ष-मति:, वृष-भानु-सुता-पद-पद्म-गति: ।**
**विधि-पर्वत-शीर्ष-निवास-रति:, ललिता-नव-रूप-धरो वियति: ॥१**

**गुरवे प्रणुमो गुरवे प्रणुमो ।**
**गुरवे प्रणुमो गुरवे प्रणुम: ॥**

**वृषभानु-सुतावर-भक्ति-धर:, मधुराकृति-मोहन-मोह-भर: ।**
**रस-सिंधु-सुधा-मधुर:प्रवर:, सरल:शरणागत-ताप-हर: ॥२**

**गुरवे प्रणुमो गुरवे प्रणुमो ।**
**गुरवे प्रणुमो गुरवे प्रणुम: ॥**

**नव-पल्लव-शोभित-कुंज-रत:, ब्रज-वास-परायण-वृंद-वृत:।**
**सुर-धेनु-सुता-कुल-पाद-नत:, नरदेव-समाज-शतैक-नुत: ॥३**

**गुरवे प्रणुमो गुरवे प्रणुमो ।**
**गुरवे प्रणुमो गुरवे प्रणुम: ॥**

**गिरि-कानन-रक्षण-भाव-वर:, सुर-मोहन-मोहन-मोहनर: ।**
**यमुना-गिरिराज-सुरूप-पर:, ललितो नररूप-धरो ह्यमर: ॥४**

**गुरवे प्रणुमो गुरवे प्रणुमो ।**
**गुरवे प्रणुमो गुरवे प्रणुम: ॥**

**नव-मान-कला-लय-लोक-बल:, बलभद्र-सुभद्र-कृपा-प्रबल: ।**
**भवभीति-विभंजन-दक्षकल:, अकल:सकल:शकल:शुकल: ॥५**

**गुरवे प्रणुमो गुरवे प्रणुमो ।**
**गुरवे प्रणुमो गुरवे प्रणुम: ॥**

**प्रेम-प्रवर्धकं नित्यं, मन:संतोष-दायकम् ।**
**करोति त्र्यम्बक:प्रेम्णा, बाबारमेश-पंचकम् ।**

दैनिक जागरण

# यूं ही नहीं मिला ब्रज के इस संत को पद्मश्री का सम्मान, जानिये रमेश बाबा की पूरी कहानी

**आगरा, जेएनएन।** पर्यावरण पुरोधा व ब्रज के विरक्त संत रमेश बाबा को पदमश्री मिलने पर ब्रज में खुशी का माहौल है।संत रमेश बाबा ने ब्रज के पौराणिक स्वरूप को बचाने के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है। उन्हें आमतौर पर ब्रज रसिकों की ओर से ब्रज के विरक्त सन्त की उपाधि दी गई है। इन्हें पर्यावरण पुरोधा संत भी कहा जाता है। इसके पीछे कारण यह है कि इन्होंने ब्रज के वन-उपवन व कृष्ण लीला से जुड़ीं प्राचीन पहाडिय़ों के लिए भी कई दशक तक जन आंदोलन किए थे। वैसे तो ब्रज के संतों की कथा शुरू होगी तो बहुत लंबी चलेगी, लेकिन राधा-कृष्ण की भक्ति करते हुए शायद ही कोई ऐसा मिले जिसने ब्रज के पर्यावरण की रक्षा के लिए आंदोलनकारी की भूमिका निभाई हो। इकलौते संत रमेश बाबा हैं, जिन्होंने ब्रज के पौराणिक स्वरूप को वापस लाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है।

**प्रयाग में 1938 में हुआ जन्म**

तीर्थराज प्रयाग में बाबा का जन्म हुआ। विख्यात ज्योतिषाचार्य बलदेव प्रसाद शुक्ल इनके पिता थे। इनकी माता का नाम हेमेश्वरी देवी थी। इस दंपती ने पुत्र प्राप्ति की इच्छा से रामेश्वरम में पुत्र कामेष्टि यज्ञ किया था। शिव कृपा से सन 1938 में पौष मास कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को मध्याह्न 12 बजे बाबा का जन्म हुआ। इनके ज्योतिषाचार्य पिता ने इनका ललाट देखते ही घोषणा कर दी थी कि यह बालक गृहस्थ ग्रहण न कर ब्रह्मचारी ही रहेगा। बाबा ने प्रयाग में ही विद्या ग्रहण की। उनके अंदर की आध्यात्मिक ज्योति उन्हें गृह त्याग कर ब्रज आने के लिए हमेशा प्रेरित करती रही। बाबा ने दो बार जन्मभूमि छोड़कर ब्रजभूमि आने की कोशिश की पर मां के स्नेह का बंधन उन्हें रोके रहा। तीसरी बार किसी तरह वे सब बंधनों को तोड़कर ब्रजभूमि आने में सफल हो ही गए।

**संत प्रियाशरणजी महाराज के शिष्य बने**

ब्रज आकर उन्होंने ख्यातिनाम संत प्रियाशरणजी महाराज का शिष्यत्व स्वीकार किया। बरसाना के ब्रह्मांचल पर्वत पर स्थित मानगढ़ उन दिनों डाकुओं का छुपने का ठिकाना होता था। बाबा ने अपने भजन ध्यान के लिए मानगढ़ को ही चुना। उस स्थान पर धार्मिक गतिविधियों के बढऩे पर

डाकुओं को वह स्थान छोडऩा पड़ा। किसी जर्जर लुप्तप्राय धर्मस्थल को कब्जा मुक्त कराने में बाबा को मिली वह पहली सफलता थी। उस समय तक शायद बाबा को खुद नहीं मालूम होगा कि उनकी वजह से ब्रज के अनगिनत दुर्लभ लुप्तप्राय धर्म स्थलियां प्रकाश में आएंगी। बाबा मान मंदिर में भजन करते और लाड़लीजी मंदिर में आकर आरतियों में हिस्सा लेते। वाद्य यंत्र बजाते हरि कीर्तन करते।

## गह्वरवन को बचाने आए आगे

बरसाना का प्रसिद्ध गह्वरवन  अवैध कब्जों का शिकार था। बाबा इस वन को नष्ट होने से बचाने के लिए आगे आए और बड़े ही संघर्षों के बाद इस स्थल को संरक्षित करवा पाए। उसके बाद ब्रज में स्थित पुराने धर्म स्थलों के जीर्णोद्धार का जो क्रम शुरू हुआ वह अनवरत जारी है।

## इन धर्म स्थलों का कराया जीर्णोद्धार

रत्न कुंड ढभाला, विह्वल कुंड संकेत, कृष्ण कुंड नंदगांव, बिछुवा कुंड बिछोर, गया कुंड कामां, लाल कुंड दुदावली, गोपाल कुंड डीग, रुद्र कुंड जतीपुरा, गोमती गंगा कोसी कलां, ललिता कुंड कमई, नयन सरोवर सेऊ, बिछुआ कुंड जतीपुरा, मेंहदला कुंड हताना, धमारी कुंड और लोहरवारी कुंड आदि सरोवरों का जीर्णोद्धार बाबा के प्रयासों से हुआ है।

## खनन रुकवाकर कृष्णकालीन स्थलियों को बचाया

उन दिनों ब्रज के धार्मिक महत्व के पर्वतों का खनन कार्य भी होता था। इससे कृष्ण कालीन स्थलियां लुप्त हो रही थीं। बाबा इन्हें बचाने के लिए भी आगे आए। अंत मे 5253 हेक्टेयर भू भाग को आरक्षित घोषित कर दिया गया।

## गोशाला की नींव रखी

ब्रज में गायों की दुर्दशा को देखकर बाबा के प्रयासों से माताजी गोशाला की नींव 2007 में रखी गई। इस गोशाला में आज 40 हजार से अधिक गायों की सेवा होती है।

## यमुना शुद्धिकरण के आंदोलन से जुड़े

यमुना मुक्तिकरण के लिए मान मंदिर सेवा संस्थान के नेतृत्व में बाबा के निर्देश पर यमुना मुक्ति आंदोलन चल रहा है। इसके लिए दो बार दिल्ली तक पद यात्राएं भी की जा चुकी हैं। बाबा की प्रेरणा से आज देश के 32 हजार गांवों में हरिनाम संकीर्तन चल रहा है।

## राधा नाम का किया प्रचार

करीब 40 साल पहले रमेश बाबा राधारानी मंदिर पर मृन्दनग बजाते थे। वहीं राधा नाम का प्रचार प्रसार में भी रमेश बाबा का बहुत योगदान रहा।

# दुख पहुंचाता है सरकार का यमुना पर वायदा न निभायाः संत रमेश बाबा

अमर उजाला ब्यूरो

**नंदगांव।** मान मंदिर गहवरवन के विरक्त संत रमेश बाबा ने कहा कि पद्मश्री सम्मान व्यक्तिगत नहीं लोगों में जागरूकता पैदा करने का काम करेगा। उन्होंने यमुना शुद्धिकरण के सरकार के दावों पर दुखः व्यक्त किया। कहा कि यमुना मुक्ति आंदोलन भी असफल ही हुआ।

संत रमेश बाबा।

पद्मश्री की घोषणा के बाद संत रमेश बाबा ने कहा यह सम्मान यमुना, गोसेवा के लिए लोगों में जनजागृति का काम करेगा, यही हम चाहते हैं। उन्होंने बताया कि ब्रज सेवा का संकल्प उन्होंने लिया है। जिसको वे पूरा कर रहे हैं। यमुना आंदोलन, गहवरवन एवं ब्रज के अन्य पर्वतों के संरक्षण पर उन्होंने बताया कि इन्हें बचाने के लिए चलाए गए अभियानों में तमाम सफलताएं भी मिली हैं। दो गायों से शुरू हुई गोशाला में आज 55 हजार से अधिक गाय हैं।

# गोसेवा के लिए बरसाना के प्रख्यात संत रमेश बाबा को मिला सम्मान

अमर उजाला ब्यूरो

**मथुरा।** गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर भारत सरकार ने बरसाना के संत रमेश बाबा को पद्मश्री सम्मान देने की घोषणा की है। रमेश बाबा को यह सम्मान गो सेवा के लिए दिया जा रहा है। बरसाना के गहवरवन में है रमेश बाबा की गोशाला। माताजी में 50 हजार से ज्यादा गाय मौजूद हैं। पिछले दिनो होली पर बरसाना आए मुख्यमंत्री आदित्यनाथ ने रमेश बाबा से मुलाकात की थी। यहां उन्होंने माताजी गोशाला को भी देखा था।

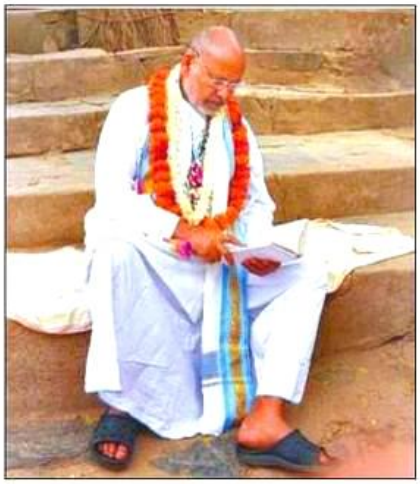

रमेश बाबा जिन्हें मिला पद्मश्री। अमर उजाला

बरसाना में स्थित माताजी गोशाला में गोबर गैस प्लांट है, जिसमें गैस से बिजली बनाई जाती है। बिजली का उपयोग गोशाला की लाइट, एक हजार लोगों की प्रसादी बनाने में किया जाता है। गैस प्लांट से 1350 घन मीटर बिजली तैयार की जाती है। जिसे 125 किलोवाट के 2 जेनरेटरों द्वारा सप्लाई किया जाता है। गैस बनने के बाद बचे हुए गोबर से जैविक व कंपोस्ट खाद बनाई जाती है।

कंपोस्ट खाद गुजरात, मुंबई सहित उद्यान विभाग को सप्लाई की जाती है। इसके अलावा गोशाला में गोबर द्वारा कई तरह के पौधे लगाने के लिए गमले भी तैयार किए जा रहे हैं। अभी कुछ दिनों पहले दिल्ली आईआईटी के छात्र बायो गैस का सैंपल लेकर गए है। अब रमेश बाबा ने गोवंश के साथ अन्य पशु-जानवरों के अस्पताल का निर्माण कार्य शुरू कर दिया है।

10 एकड़ में अस्पताल का निर्माण हो रहा है। यह अस्पताल जून 2019 तक बनकर पूर्ण हो जाएगा। रमेश बाबा ब्रज में आने के बाद इससे बाहर कभी नहीं गए है। उन्होंने बरसाना और डींग, कामा की पहाड़ियों पर हो रहे खनन के खिलाफ भी अभियान चलाया था। अब यहां खनन बंद है। रमेश बाबा के नेतृत्व में प्रत्येक वर्ष राधारानी ब्रज यात्रा भी निकाली जाती है, जिसमें हजारों भक्त शामिल होते हुए ब्रज परिक्रमा करते हैं। यह यात्रा ब्रज के ऐसे स्थलों तक जाती हैं जहां आमतौर पर लोग नहीं जाते हैं।

NBT नवभारत टाइम्स

**गोसेवा करके बनाई पहचान: रमेश बाबा जी महाराज**

रमेश बाबा जी महाराज को गोसवा के लिए देश भर में जाना जाता है। बाबाजी महाराज मथुरा के बरसाना में 170 एकड़ में ब्रज क्षेत्र की सबसे बड़ी गोशाला श्रीमाताजी गोशाला के नाम से चलाते हैं। इस गोशाला में 55000 गोवंश की सेवा की जा रही है। यहां 99 प्रतिशत उपेक्षित, बीमार और गो तस्करी से मुक्त कराया गया गोवंश है। यहां गोबर गैस प्लांट है और गाय के दूध के अलावा गोमूत्र और गोबर को भी उपयोगी बनाया जाता है। गोशाला की शुरुआत 2007 में की गई थी |

The Indian EXPRESS

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | Madbaiya | | Education | Bundeli | Pradesh | | |
| 64 | **Ramesh Babaji Maharaj** | PS | Social Work | Animal Welfare | Uttar Pradesh | M | Spiritual Leader and founder of Mataji Gaushala - takes care of **45,000 cows**, and has India's largest Bio-gas plant |
| | **Vallabhbhai Vasrambhai Marvaniya** | PS | Others | Agriculture | Gujarat | M | Organic farmer from Junagarh known for developing **Madhuvan Gajar** - high yielding variety of carrots cultivated in Gujarat, Maharashtra and Rajasthan |
| 6 | **Gita Mehta** | PS | Literature and Education | Literature - English | USA | F | **Author** and Filmmaker focused on Indian **Culture** and **History** |
| 67 | **Shadab Mohammad** | PS | Medicine | Dentistry | Uttar Pradesh | M | Head of Department of **Oral** and **Maxillofacial** Surgery at King George Medical University Lucknow |
| 68 | **K K Muhammed** | PS | Others | Archaeology | Kerala | M | Veteran **Archaeologist** - restored and **preserved ancient Indian structures** across India |
| 69 | **Shyama Prasad** | PS | Medicine | Affordable | Jharkhand | M | Doctor providing quality healthcare to the **poor** in Jharkhand - proving **treatment** |

# सम्मान का समाज में फर्क, मेरे लिए महत्व नहीं : रमेश बाबा



रविवार को पुस्तक का अध्ययन करते हु रमेश बाबा • जागरण

संवाद सूत्र, बरसाना : पदमश्री पुरस्कार की सूची में नाम आने पर ब्रज के विरक्त संत रमेश बाबा ने कहा कि पदमश्री उनके लिए किसी काम का नहीं। हां, इससे लोगों में जन जागृति आ सकती है। सेवा कार्य पर कहा कि सब भगवत कृपा है वरना उनकी इतनी सामर्थ्य नहीं है। कृष्णलीला भूमि की पहाड़ियों को खनन से बचाने के लिए माफिया से प लेने से लेकर यमुना मुक्ति के लिए दिल्ली मार्च निकाल वाला यह संत सरकारों के कामकाज के तरीके से निराश कहा कि सरकार से कोई उम्मीद नहीं करते। दो बार हम सरकारों से यमुनाजी की स्वच्छता की इच्छा की, लेकि निराशा ही मिली। अब बस प्रभु पर विश्वास करते हैं की व सब कार्यों को करेंगे। रमेश बाबा की ओर से वर्तमान में 5 हजार गोवंश की सेवा की जा रही है। ब्रज में स्थित वन कुं सरोवर के अस्तित्व को बचाने के लिए बहुत कार्य किया इन सब उपलब्धियों को देखते हुए सरकार ने पदमश्री के लि रमेश बाबा का चयन किया।

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्
आर.एन.आई. पंजीकरण संख्या 51651/90
ब्रज गरिमा
स्व० पुरुषोत्तम लाल चूड़ामणि संस्थापक
(आगरा मण्डल सहित राजस्थान व हरियाणा में प्रसारण) मथुरा (उ.प्र.)
दैनिक सान्ध्य

## प्रख्यात संत रमेश बाबा पद्मश्री सम्मान से नवाजे

### 55 हजार गायों की करते हैं सेवा



नई दिल्ली, गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने मथुरा के संत रमेश बाबा को पद्मश्री सम्मान देने की घोषणा की है। रमेश बाबा को यह सम्मान गो सेवा के लिए दिया जा रहा है। रमेश बाबा की गौशाला माताजी में 55 हजार से ज्यादा गांय मौजूद हैं। पिछले दिनो होली पर बरसाना आये मुख्यमंत्री आदित्यनाथ ने रमेश बाबा से मुलाकात की थी। यहां उन्होंने माताजी गोशाला को भी देखा था। बरसाना में स्थित माताजी गौशाला में गोबर गैस प्लांट है जिसमें गैस से बिजली बनाई जाती है। बिजली का उपयोग गोशाला की लाइट, एक हजार लोगों की प्रसादी बनाने में किया जाता है। गैस प्लांट से 1350 घन मीटर बिजली तैयार की जाती है। जिसे 125 किलोवाट के 2 जनरेटर द्वारा सप्लाई किया जाता है। गैस बनने के बाद बचे हुए गोबर से जैविक व कम्पोस्ट खाद बनाई जाती है। कम्पोस्ट खाद गुजरात, मुम्बई सहित उद्यान विभाग को सप्लाई की जाती है।

इसके अलावा गोशाला में गोबर द्वारा कई तरह के पौधे लगाने के लिए गमले भी तैयार किये जा रहे हैं। अभी कुछ दिनों पहले दिल्ली आईआईटी के छात्रों ने बायो गैस का सैंपल लेकर गए है। अब रमेश बाबा ने गोवंश के साथ अन्य पशु-जानवरों के हॉस्पिटल का निर्माण कार्य हुआ शुरू कर दिया है। 10 एकड़ में हॉस्पिटल का निर्माण हो रहा है। यह हॉस्पिटल जून 2019 तक बनकर तैयार हो जाएगा। रमेश बाबा ब्रज में आने के बाद इससे बाहर कभी नहीं गए है। उन्होंने बरसाना और डींग, कामा की पहाड़ियों पर हो रहे खनन के खिलाफ भी अभियान चलाया था। अब यहां खनन बन्द है। रमेश बाबा के नेतृत्व में प्रत्येक वर्ष राधारानी ब्रज यात्रा भी निकाली जाती है, जिसमे हजारो भक्त शामिल होते हुए ब्रज परिक्रमा करते हैं।

ब्रज के विरक्त संत रमेश बाबा को पद्मश्री पुरस्कार दिए जाने से संतों का गौरव बड़ा है। कहीं न कहीं भारत सरकार संतों के मान सम्मान रखने में भी आगे है।
संत विनोद बाबा

संतों का सम्मान सिर्फ भाजपा सरकार में ही हो सकता है। भाजपा की पूरी विचार धारा हिंदुत्व व प्राचीन संस्कृति को संवारने व सजाने के लिए है।
महंत रामरज बाबा, सुदामा कुटी

रमेश बाबा बरसाना के गौरव है। इनकी माताजी गोशाला एशिया की सबसे बड़ी गोशाला है। इनके प्रभाव से आज सैकड़ों गांव में राधा नाम संकीर्तन होता रहता है।
लक्ष्मण प्रसाद शर्मा, पूर्व जेल विजिटर

पहली बार भारत सरकार ने ब्रज के संतों को इस तरह का पुरस्कार दिया है। पद्मश्री पुरुस्कार से ब्रज के संतों का गौरव बड़ा है।
सुनील सिंह, मान मंदिर के सचिव

## मथुरा के संत रमेश बाबा और फ्रेडरिक इरिना को पद्मश्री

हिन्दुस्तान टीम,मथुरा

- Last updated: Fri, 25 Jan 2019 11:12 PM IST

बरसाना के संत रमेश बाबा और राधाकुंड की फ्रेडरिक इरिना को भारत सरकार ने पद्मश्री सम्मान से नवाजा है। दोनों को ही ये सम्मान समाज कल्याण और पशु सेवा के लिए दिया गया है। मिली जानकारी के अनुसार बरसाना के संत रमेश बाबा और हाल में राधाकुंड निवासी महिला फ्रेडरिक इरिना से मिलने कुछ दिन पहले भारत सरकार की टीम आई थी। वे उनकी सेवाओं की जानकारी इकट्ठा कर ले गए थे। शुक्रवार को उन्हें सम्मान की घोषणा की गई। संत रमेश बाबा पिछले 62 साल से ब्रज की रज को माथे पर लगाए हुए हैं। सेवा भाव के चलते उन्होंने यहां से बाहर भी कदम नहीं रखा है। यही नहीं वे यहां माताजी गौशाला भी चलाते हैं, जिसमें 50 हजार से ज्यादा

# पूज्यश्री बाबा महाराज द्वार अपनी माँ को लिखा गया पत्र

**जब पूज्यश्री रमेश बाबाजी महाराज घर से बरसाना आ चुके थे, तब उनकी माताजी ने उन्हें वापस घर आने के लिए पूछा था | उसी के उत्तर में बाबाश्री ने पत्र लिखकर माताजी को जो जबाव दिया.....उसी पत्र की मूल प्रति संलग्न की जा रही है**

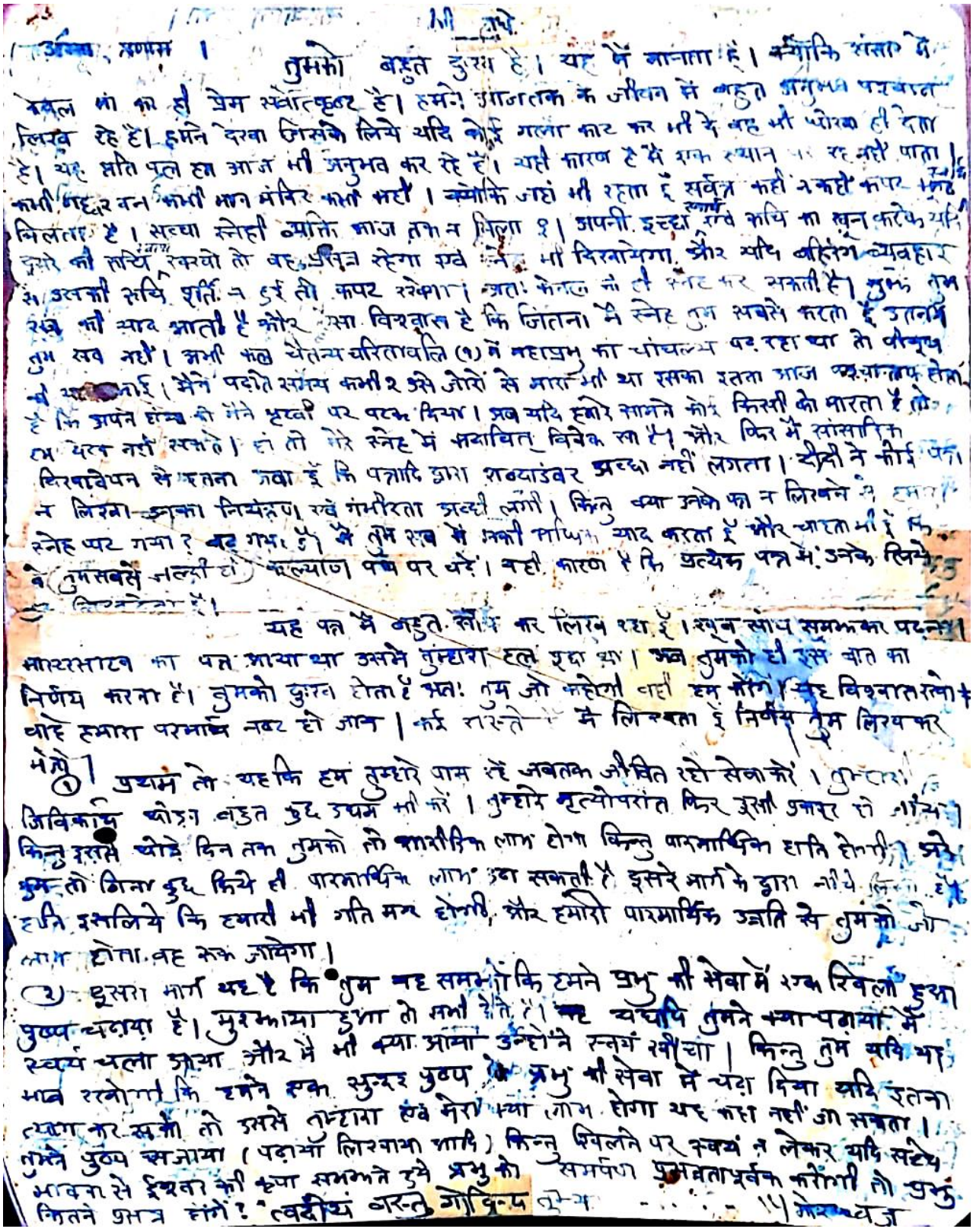

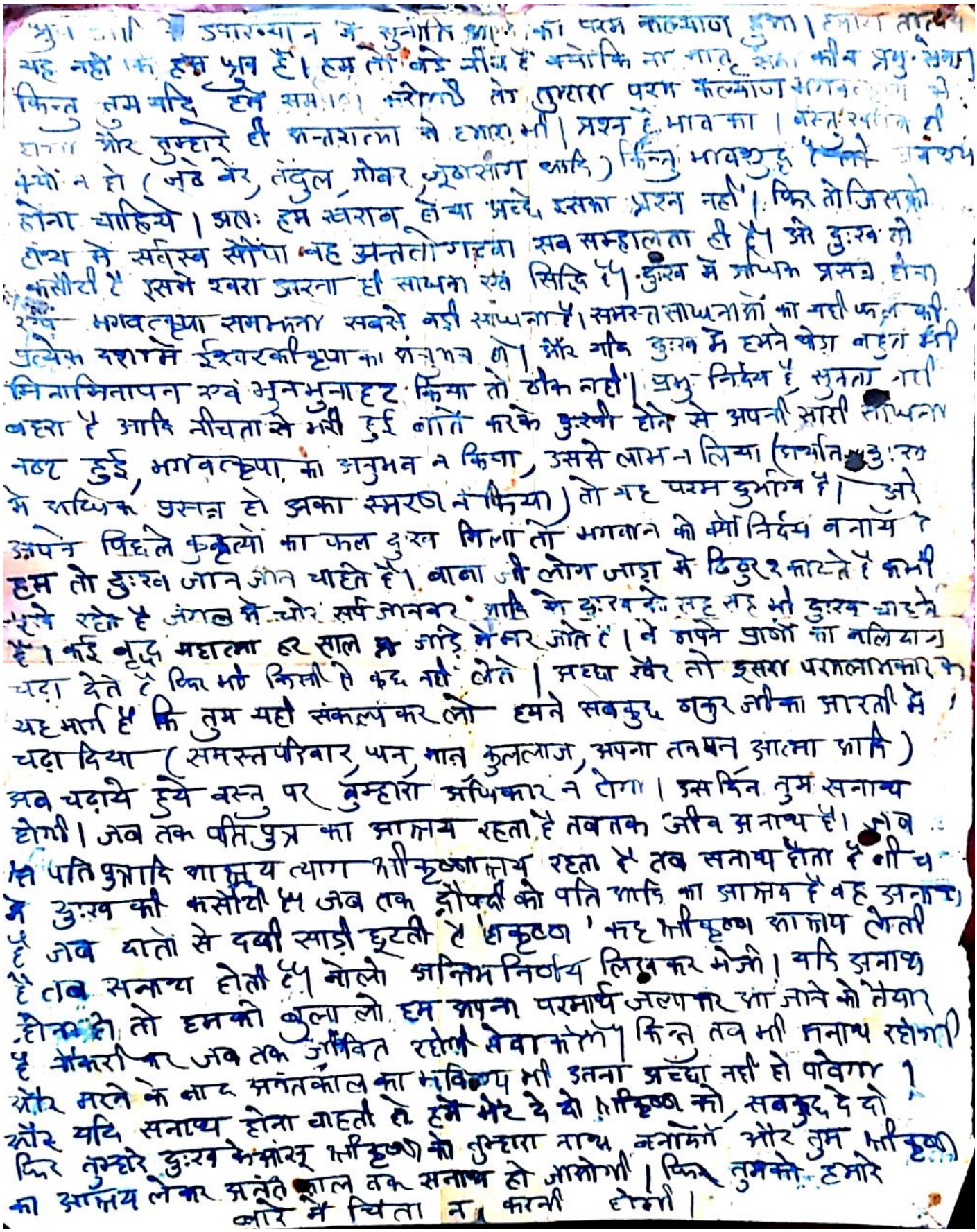

भूरा जी ने व्याख्यान में सुनाते आप [illegible] का परम कल्याण हुआ। हमारा तात्पर्य
यह नहीं कि हम प्रभु हैं। हम तो बड़े नीच हैं क्योंकि न [illegible] सका कीन प्रभु-सेवा]
किन्तु तुम यदि हमें समझ(?) करोगी तो तुम्हारा परम कल्याण भगवत्कृपा से।
हमारा और तुम्हारे ही अन्तरात्मा से हमारा भी। प्रश्न है भाव का। वस्तु स्वल्प ही
क्यों न हो (जैसे बेर, तंदुल, गोबर, जूठासाग आदि) किन्तु भावशुद्ध [illegible] अवश्य
होना चाहिये। अतः हम खराब हैं या अच्छे, इसका प्रश्न नहीं। फिर तो जिसको
हाथ में सर्वस्व सौंपा वह अन्ततोगत्वा सब सम्हालता ही है। और दुःख तो
कसौटी है इसमें खरा उतरना ही साधना एवं सिद्धि है। दुःख में अधिक प्रसन्न होना
एवं भगवत्कृपा समझना सबसे बड़ी साधना है। समस्त साधनाओं का यही फल है कि
प्रत्येक दशा में ईश्वर की कृपा का अनुभव हो। और यदि दुःख में हमने थोड़ा बहुत भी
भिनाभिनापन एवं भुनभुनाहट किया तो ठीक नहीं। प्रभु निर्दय है सुनता नहीं
बहरा है आदि नीचता से भरी हुई बातें करके दुःखी होने से अपनी सारी साधना
नष्ट हुई, भगवत्कृपा का अनुभव न किया, उससे लाभ न लिया (अर्थात् दुःख
में अधिक प्रसन्न हो उनका स्मरण न किया) तो यह परम दुर्भाग्य है। और
अपने पिछले कुकृत्यों का फल दुःख मिला तो भगवान को क्यों निर्दय बनायें?
हम तो दुःख जान जान चाहते हैं। बाबा जी लोग जाड़ा में ठिठुर कर काटते हैं कभी
भूखे रहते हैं जंगल में चोर सर्प जानवर आदि के दुःख को सह सह भी दुःख चाहते
हैं। कई वृद्ध महात्मा हर साल [illegible] जाड़े में मर जाते हैं। वे अपने प्राणों का बलिदान
चढ़ा देते हैं फिर भी किसी से कुछ नहीं लेते। अच्छा खैर तो इसका परमलाभकारी
यह मार्ग है कि तुम यही संकल्प कर लो हमने सबकुछ ठाकुर जी का आरती में
चढ़ा दिया (समस्त परिवार, धन, मान, कुललाज, अपना तन मन आत्मा आदि)
अब चढ़ाये हुये वस्तु पर तुम्हारा अधिकार न होगा। उस दिन तुम सनाथ
होगी। जब तक पति पुत्र का आश्रय रहता है तब तक जीव अनाथ है। जब
से पति पुत्रादि का आश्रय त्याग श्रीकृष्णाश्रय रहता है तब सनाथ होता है बीच
में दुःख की कसौटी है जब तक द्रौपदी को पति आदि का आश्रय है वह अनाथ
है जब हाथों से दबी साड़ी छूटती है 'हा कृष्ण' यह श्रीकृष्ण आश्रय होती
है तब सनाथ होती है। बोलो अन्तिम निर्णय लिखकर भेजो। यदि अनाथ
होना हो तो हमको बुला लो हम अपना परमार्थ जला कर आ जाने को तैयार
हैं नौकरी कर जब तक जीवित रहोगी सेवा करेंगे। किन्तु तब भी अनाथ रहोगी
और मरने के बाद अनंतकाल का भविष्य भी इतना अच्छा नहीं हो पावेगा।
और यदि सनाथ होना चाहती हो हमें और दे दो श्रीकृष्ण को, सबकुछ दे दो
फिर तुम्हारे दुःख के आँसू श्रीकृष्ण को तुम्हारा नाथ बनायेंगे और तुम श्रीकृष्ण
का आश्रय लेकर अनंत काल तक सनाथ हो जाओगी। फिर तुमको हमारे
बारे में चिंता न करनी होगी।

फिर हम चाहें मरें या रहें, महात्मा बनें या सांसारिक कीड़े बनें। इसके बारे में तुम उदासीन होने की साधना करना। क्योंकि हमने न्योछावर कर दिया अर्पण कर दिया अब उस पर अधिकार श्रीकृष्ण का अधिकार है वे बनायें या बिगाड़ें।

हम नित्य पुष्प चढ़ाते हैं। चढ़ाकर लौट जाते हैं फिर उस पुष्प का क्या होता है यह नहीं जानते। हम यह विश्वास रखें कि हमारे पुष्प को ठाकुर जी ने अवश्य सूँघा होगा। (फिर पत्रादि ठाकुर जी को लिखना सम्बन्ध उनसे ही तुम भी एक ओर लगो) हम एक तरफ लगाना चाहते हैं। या तो अपना पारमार्थिक लाभ एवं मेरा नष्ट करके हमको बुला लो हमको पीछे संसार में ब्रजवास छुड़ा लौटाकर अपनी सेवा में लगा लो या श्रीकृष्ण की सेवा में लगा दो। एक निर्णय करो। हम तैयार बैठे हैं तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा में।

फिर श्रीकृष्ण की सेवा में लगाने पर यदि हम जायें तो भी एक राजपूत क्षत्राणी की भांति (पति+पुत्रों) लोटा लेकर युद्ध में अर्थात् सेवा में भेजना होगा। पत्र भी कौन करे? हम यदि पत्र भेजें या वहां आयें तब भी तुम हमसे मत बोलना यह होगी सच्ची सेवा। अरे अनन्त जन्मों में दुःख सहा यदि एक जन्म में प्रसन्नतापूर्वक हिम्मत करके सह लिया तो बेड़ा पार। हम क्या करें माँ का हृदय है यह सब गलत है। मनुष्य यदि साधना करे तो सब कर सकता है एक पुत्र की आसक्ति पर लात मारना तो मामूली बात है। मोरध्वज आदि पेट से महात्मा नहीं हुये। हिम्मत से एवं अभ्यास से सबकुछ मिल जाता है श्रीकृष्ण तक मिलते हैं एवं अकर्मण्यता और निराशा से न चाहने पर भी यमराज की प्राप्ति अनंत काल तक होती है। मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है वह सबकुछ अभ्यास से कर सकता है ऐसा भगवान ने गीता जी में कहा है "अभ्यासेन तु कौन्तेय ..."। यदि ये दोनों मार्ग न पसन्द हो तो एक और युक्ति है कि तुम ब्रज चली आओ। यहां सब प्रबन्ध निश्चय होगा। हम पास ही रखेंगे। किन्तु इसमें इलाहाबाद बिलकुल छोड़ के आना होगा। जिस दिन इच्छा हो आ सकती हो।

मेरा स्नेह था इसलिये तुम सबसे थे किन्तु क्या करें एक ओर लगाने से ही कल्याण होगा। और एक मांस खून के हम तीन ही तो बचे हैं। तुम → हम दीदी। एक मूल दो शाखा। स्नेह ग्रन्थि मुनियों की नहीं नष्ट होती है शास्त्र में बताया है। किन्तु उस स्नेह के पीछे अन्धे हो कर्तव्यपथ का त्याग करना उचित है या अनुचित। तुम्ही सोचो। स्नेह है तभी तो हम इलाहाबाद गये थे। बहुत सी बातें सोचकर गये थे।

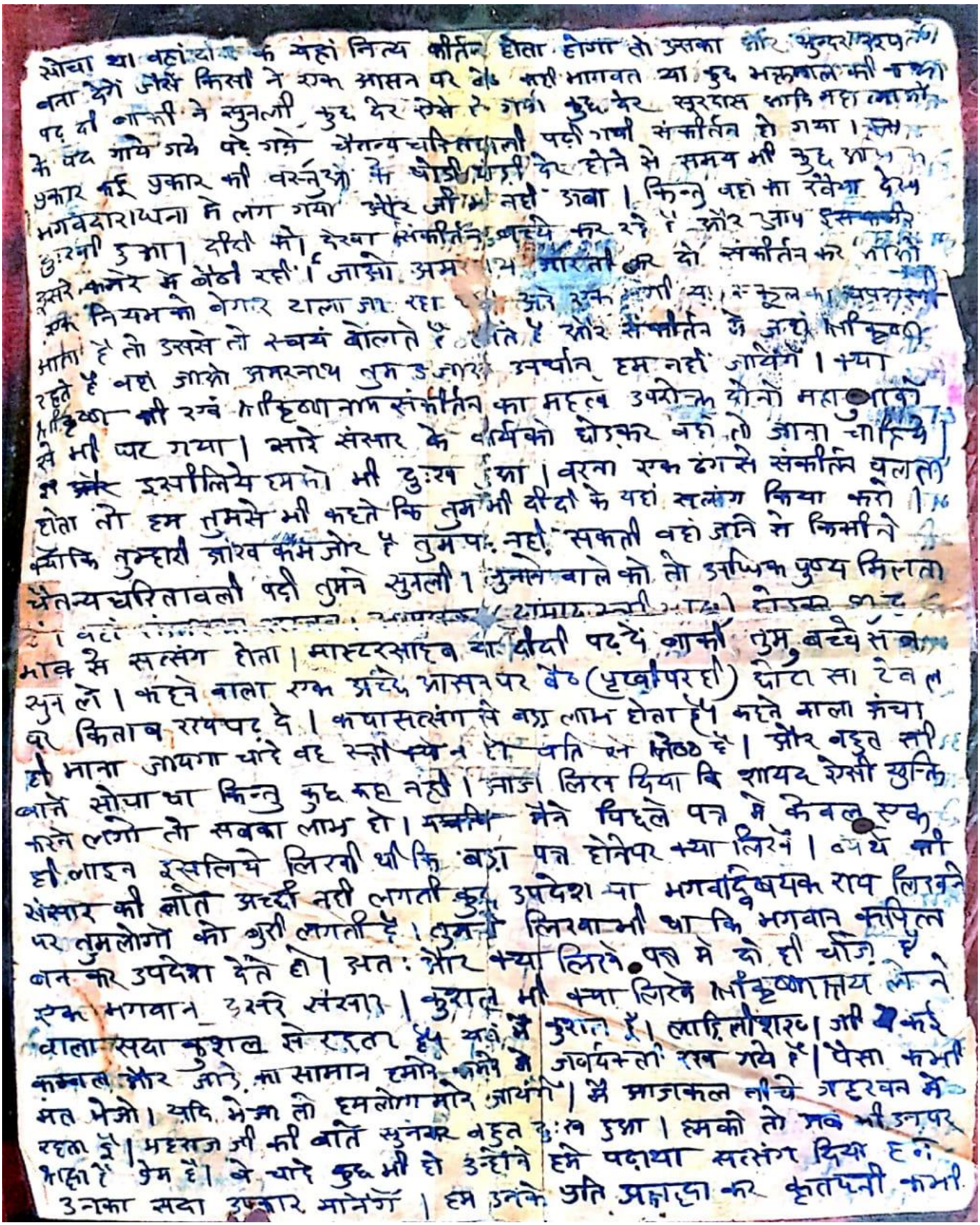

सोचा था वहां दो [illegible] के यहां नित्य कीर्तन होता होगा तो उसका और सुन्दर रूप [illegible]
बना देंगे जैसे किसी ने एक आसन पर बैठ कर भागवत या कुछ भक्तमाल की [illegible]
पढ़ दी बाकी ने सुनली, कुछ देर ऐसे ही गाये कुछ देर सूरदास आदि महात्माओं
के पद गाये गये पढ़े गये चैतन्यचरितावली पढ़ी गयी संकीर्तन हो गया। [illegible]
प्रकार कई प्रकार की वस्तुओं में थोड़ी थोड़ी देर होने से समय भी कुछ [illegible]
भगवदाराधना मे लग गया और जी भी नहीं ऊबा। किन्तु वहां का रवैया देख
दुःखी हुआ। दीदी को देखा संकीर्तन बन्द कर रहे हैं और उधर इसका [illegible]
उसके कमरे में बैठी रही। जाओ अम[illegible] आरती कर दो संकीर्तन कर [illegible]
एक नियम को बेगार टाला जा रहा [illegible] और एक [illegible] कुल का [illegible]
आता है तो उससे तो स्वयं बोलाते हैं [illegible] हैं और संकीर्तन में [illegible]
रहते हैं वहां जाओ अमरनाथ तुम उनको अर्थात हम नहीं जायेंगे। क्या
[illegible] की एवं श्रीकृष्ण नाम संकीर्तन का महत्व उपरोक्त दोनों महा[illegible]
से भी घट गया। सारे संसार के कार्य को छोड़कर वहां तो जाना चाहिये
[illegible] इसीलिये हमको भी दुःख हुआ। वरना एक ढंग से संकीर्तन चलता
होता तो हम तुमसे भी कहते कि तुम भी दीदी के यहां सत्संग किया करो।
क्योंकि तुम्हारी आंख कमजोर है तुम पढ़ नहीं सकती वहां जाने से किसी ने
चैतन्यचरितावली पढ़ी तुमने सुनली। सुनने वाले को तो अधिक पुण्य मिलता
[illegible]
[illegible] भाव से सत्संग होता। मास्टरसाहब या दीदी पढ़ें बाकी तुम, बच्चे सब
सुन लें। कहने वाला एक ऊंचे आसन पर बैठे (पृथ्वीपर ही) छोटा सा टेबल
पर किताब रखकर दे। कथासत्संग से बड़ा लाभ होता है। कहने वाला ऊंचा
ही माना जायगा चाहे वह स्त्री [illegible] हो [illegible] है। और बहुत सी
बातें सोचा था किन्तु कुछ रहा नहीं। आज लिख दिया कि शायद ऐसी युक्ति
करने लगो तो सबका लाभ हो। [illegible] मैने पिछले पत्र मे केवल एक
ही लाइन इसलिये लिखी थी कि बड़ा पत्र होनेपर क्या लिखें। व्यर्थ की
संसार की बातें अच्छी नहीं लगतीं कुछ उपदेश या भगवद्विषयक राय लिखने
पर तुमलोगों को बुरी लगती है। तुमको लिखा भी था कि भगवान कपिल
बन कर उपदेश देते हो। अतः और क्या लिखें। पत्र मे दो ही चीज हैं
एक भगवान दूसरे संसार। कुशल भी क्या लिखें श्रीकृष्णाश्रय लेने
वाला सदा कुशल से रहता है। यहां मैं कुशल हूं। लाडिलीशरण जी कई
कम्बल और ओढ़ने का सामान हमारे [illegible] मे [illegible] रख गये हैं। पैसा कभी
मत भेजो। यदि भेजा तो हमलोग मारे जायेंगे। मैं आजकल नीचे [illegible] में
रहता हूं। महराज जी की बातें सुनकर बहुत दुःख हुआ। हमको तो अब भी उनपर
श्रद्धा है प्रेम है। वे चाहे कुछ भी हो उन्होंने हमे पढ़ाया सत्संग दिया हम
उनका सदा उपकार मानेंगे। हम उनके प्रति अश्रद्धा कर कृतघ्नी कभी

# सच्चे सुहृद संतजन

श्रीबाबामहाराज के प्रातःकालीन सत्संग (१४,१५/१२/२००६) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी माधुरीजी, मानमन्दिर, बरसाना

कलियुग में जीवों के अन्दर 'अहं' पैदा हो गया जो सबसे बड़ी झगड़े की झोपड़ी बन गया – अपनी मालकियत समझने वाला ठाकुर कहता है कि हम किसी से क्यों दबें, बनिया बोलता है कि हम क्यों किसी की बात को सहें, शूद्र कहता है कि क्या हम किसी से कम हैं ? मिथ्याभिमान के कारण से ही बेटा, बाप से बोलता है कि मैं अकेले सब काम नहीं करूँगा, मेरा विवाह हो गया है, मैं अलग हो जाऊँगा | बहू, सास से कहती है – 'मैं बन्धन में नहीं रह सकती |' बड़प्पन की दुर्भावनाओं से कलि अर्थात् फूट पैदा हो गई, इसी को 'कलियुग' कहते हैं | कलियुग में कोई आदमी किसी की सह नहीं सकता | एक जरा-सा चींटा भी छोटा नहीं बनना चाहता, इसीलिए समाज की सब व्यवस्था बिगड़ गयी और वह बिगड़ती ही जा रही है | जब तक धर्म के चार चरणों (तप, पवित्रता, दया, सत्य) का सम्यक् पालन नहीं होगा, तब तक कोई भी धर्म सिद्ध नहीं हो सकता, न लोक-धर्म सिद्ध होगा, न वेद-धर्म, न भागवत-धर्म, न वैष्णव-धर्म | इसलिए भागवतजी में सबसे पहले 'धर्म' के इन्हीं चार चरणों का वर्णन किया गया है –

**तपः शौचं दया सत्यमिति पादाः कृते कृताः |**
**अधर्मांशैस्त्रयो भग्नाः स्मयसङ्गमदैस्तव ॥**

(श्रीमद्भागवतजी १/१७/२४)

कलियुग में धर्म के तीन चरण नष्ट ही हो चुके हैं, इसलिए संसार में अशान्ति है, कलह है | बुद्धिमान लोग धर्म के इन चरणों का पालन करते हैं, बाकी हमजैसे लोग तो इनका महत्त्व ही नहीं समझते हैं | भगवान् के भक्तों (संतों) का इतना करुणामय स्वभाव होता है कि वे भगवान् से मिलने के बाद भी बहुत दुःखी रहते हैं जबकि भगवान् अनंत सुख के निधान हैं, आनंद स्वरूप हैं लेकिन फिर भी उनसे मिलने के बाद भी भक्तजन दुःखी रहते हैं, यह एक विचित्र बात है | भक्तों का दुःख दूसरे ढंग का होता है | हर व्यक्ति का दुःख अलग ढंग का होता है तो भक्तों का दुःख भी बिल्कुल अलग है | दुःख भी बहुत प्रकार के होते हैं - लौकिक दुःख, अलौकिक दुःख तथा एक दुःख इनसे भी आगे होता है; दुःख की बहुत-सी कोटियाँ होती हैं | हमजैसे लोग संसारी हैं जो लौकिक दुःखों से पीड़ित रहते हैं, दैहिक, दैविक, भौतिक तापों से संतप्त होते हैं | इनसे ऊपर जो 'अलौकिक या दिव्य दुःख' भक्तजनों को होता है; वे संसार के विषय-भोगों में फँसे हुए बहिर्मुखी जीवों को देखकर बहुत ज्यादा दुःखी होते हैं (उन विमुख लोगों को भगवान् की ओर चलाने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहते हैं), लेकिन ये दुःख उनकी शोभा है जो उनकी भक्ति को बढ़ाता है, ऐसा दुःख जिसके हृदय में होता है, वह भगवान् का परम प्रिय बन जाता है |

श्रीप्रह्लादजी ने नृसिंह भगवान् से कहा था –

**नैवोद्विजे पर दुरत्यय वैतरण्यास्त्वद्वीर्यगायन महामृतमग्नचित्तः ।**
**शोचे ततो विमुखचेतस इन्द्रियार्थ मायासुखाय भरमुद्वहतो विमूढान् ॥**

(श्रीमद्भागवतजी ७/९/४३)

"हे भगवन् ! मुझे भवसागर पार करने की चिन्ता नहीं है क्योंकि मैं आपका गुणगान करता हूँ; जिसको आपके गुणगान में आनन्द आने लग गया, वह तो भवसागर पार हो ही गया, वह बहुत बड़भागी है जिसका मन आपकी महिमा-गायन में डूब गया | अब मुझे अपना तो कोई दुःख नहीं रहा क्योंकि आपका गुणगान करने लग गया हूँ, लेकिन संसार में फँसे हुए विमुख जीवों के बारे में मुझे

बहुत कष्ट होता है, क्योंकि ये मूर्ख लोग माया का बोझ संग्रह करते हैं, इन्हें देखकर बहुत ग्लानि होती है कि ये क्या करेगें, कहाँ जायेगें, अनन्त अन्धकार में पड़े हुए हैं और अनन्त अन्धकार में जा रहे हैं, ऐसे अन्धकूप में जा रहे हैं जहाँ से ये कभी निकल नहीं सकते, इन मोहांधी (मोह के अन्धकार में अंधे) जीवों को आपने कृपा करके भव-बन्धन से छूटने के लिए मनुष्य बना दिया फिर भी ये अज्ञानी लोग चौरासी लाख योनियों में ही जाने का प्रयास कर रहे हैं | " श्रीभगवान् के प्रेम में डूबना तो एक बहुत ऊँची स्थिति है, यदि किसी को भगवान् का गुणगान करना ही अच्छा लगने लगे तो वह भी अत्यन्त सौभाग्यशाली है और समझो कि वह निश्चित ही भवसागर पार हो गया | भगवान् का यश गाने से भक्त सबसे बड़ा बन जाता है | यहाँ तक कि भक्तों की चरण-रज से पवित्र होने के लिए भगवान् भी उनके पीछे-पीछे चलते हैं | भक्तजनों की महिमा जितनी भी कही जाए, वह कम ही है | भगवान् से भी ज्यादा दया (कृपा) भक्तों में देखी जाती है | भक्त के हृदय में करुणा इतनी बढ़ जाती है कि वह बहुत दुःखी रहता है, वह देखता है कि ये संसार के लोग भोगों में लगे हुए हैं, पैसा इकट्ठा कर रहे हैं संसार का सुख पाने के लिए, जो संसार के विषय-भोग 'भगवान्' से बिल्कुल अलग कर देते हैं | हमलोग साधु बनकरके भी शाल-दुशाला आदि विनाशी वस्तुओं का संग्रह करते हैं | स्त्रियाँ साड़ी-गहना आदि मिथ्या वस्तुओं का संग्रह करती हैं | श्रीभगवान् से दूर करने वाली असद् आसक्तियों के कारण जीव को चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ता है, इस सम्बन्ध में एक प्रत्यक्ष घटना है – एक बार कुछ लोगों ने श्रीबाबामहाराज को बताया कि एक सैनिक था, वह चीन की सीमा पर बर्फ में दब गया तो मृत्यु हो गयी लेकिन अब भी उसका वेतन, उसकी पेन्शन उसके घर वालों को पहुँचायी जाती है | लोगों को अनुभव होता है कि उस मृतक सैनिक को दो महीने की छुट्टी दी जाती है और वह सैनिक सीमा पर देखा जाता है कि वह टहल रहा है, फिर वह घर आ जाता है छुट्टियों में, घर में भी लोग अनुभव करते हैं कि छुट्टियों में वह घर आया है, छुट्टी खत्म होते ही वह अपनी ड्यूटी पर चला जाता है | इससे पता पड़ता है कि उसकी जीवात्मा तो है ही, उस सैनिक का देश की सीमा की रक्षा के प्रति अभिनिवेश था, तो वह सूक्ष्म शरीर से आज भी काम कर रहा है | श्रीभगवान् ने गीताजी में कहा है –

**यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।**
**तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ||**

(श्रीमद्भगवद्गीताजी ८/६)

शरीर छोड़ते समय मनुष्य का जो भाव रहता है, वह उसी भाव को प्राप्त हो जाता है | अधिकतर लोग अपनी परिवारिक आसक्ति के कारण साधु बनकर भी घर-परिवार वालों के लिए धन-संग्रह करते रहते हैं, जीवन की थोड़ी-सी शेष आयु के अतिरिक्त भविष्य के अनन्त जीवन के बारे में कुछ नहीं सोचता और केवल संग्रह करता है और थोड़े दिनों में मर जाता है, मरने के बाद अनन्तकाल के लिए चौरासी लाख योनियों में भटकता रहता है; इस तरह अनन्त जीवन का नाश कर लेता है | इस आत्मपतन से बचने का केवल एक ही उपाय है कि वही सांसारिक आसक्ति भगवान् के विशुद्ध भक्तों में कर ली जाय तो अवश्य ही संसार के भव-बन्धन से मनुष्य मुक्त हो जाएगा और भगवत्प्रेम मिल जाएगा |

**प्रसङ्गमजरं पाशमात्मनः कवयो विदुः |**
**स एव साधुषु कृतो मोक्षद्वारमपावृतम् ||**

(श्रीमद्भागवतजी ३/२५/२०)

# भगवद्‌रस-वर्षण से भवाग्नि-शमन

श्रीबाबा महाराज द्वारा कथित संध्याकालीन सत्संग 'शिक्षाष्टक' (२४/१/२००६) से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी नवीनाश्री जी, मानमन्दिर, बरसाना

**चेतोदर्पण मार्जनं भवमहादावाग्नि निर्वापणं,**
**श्रेयः कैरव चन्द्रिका वितरणं विद्यावधूजीवनम् |**
**आनन्दाम्बुधि वर्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं,**
**सर्वात्मस्नपनं परं विजयते कृष्णसंकीर्तनम् ||**

(शिक्षाष्टकम् - १)

इस श्लोक में श्रीकृष्ण-संकीर्तन की महत्ता श्रीचैतन्य महाप्रभु ने बताई है | संकीर्तन के सात गुण प्रस्तुत श्लोक में कहे गये हैं | पहले चार गुण तो साधक अवस्था के हैं और पिछले तीन गुण सिद्धावस्था के हैं | संकीर्तन का पहला गुण है – '**चेतोदर्पण मार्जनम्**' – चित्त रूपी दर्पण (शीशा) को यह साफ़ करने वाला है | चित्त एक दर्पण (शीशा) है | इस दर्पण पर गन्दगी (मैल) जमी हुई है, उससे यह ढक गया है | उस मैल को कृष्ण-कीर्तन मार्जन करता (हटाता) है | चित्त को दर्पण क्यों कहा गया ? दर्पण में आप अपना मुँह देखते हैं, आपके मुख को दर्पण अपने भीतर दिखा देता है, उसको प्रतिफलन कहते हैं | चित्त में वह शक्ति है, चित्त इतना स्वच्छ है कि पास आने वाली वस्तु का वह प्रतिफलन करता है | हम लोग जो भोग भोगते हैं, लड्डू-पेड़ा आदि खाते हैं, क्या इसका भी प्रतिफलन होता है ? नहीं, इसका प्रतिफलन नहीं होता है क्योंकि अपने निकट वाली वस्तु का चित्त प्रतिफलन करता है | जैसे - दर्पण आपके पास रखा है और कोई १ कि.मी. दूर बैठा है तो वहाँ से प्रतिफलन नहीं होगा | सबसे निकट हैं - भगवान्, भगवान् का धाम, भगवान् के भक्त | जो वस्तु सर्वव्यापी है, वह चित्त के पास में है, उसका प्रतिफलन होता है | मनुष्य जो विषय-भोग भोगता है, ये प्रतिफलन नहीं है, मैल है | प्रतिफलन वह था कि शीशे में आपने अपना मुँह देखा तो दिखाई पड़ा कि आँखों में काजल फ़ैल रहा है, तिलक टेढ़ा लग गया है, ये सब आपको दर्पण में दिखाई देता है, इसको प्रतिफलन कहा जाता है | संसार के विषय आदि व्यापक नहीं हैं, निकट नहीं हैं, ये मैल हैं, ये चित्त की प्रतिफलन शक्ति को नष्ट कर देते हैं, इसलिए उसमें प्रतिबिम्ब दिखाई नहीं पड़ता | भगवान् पास में हैं लेकिन दिखाई नहीं पड़ते हैं, क्यों ?

**मुकुर मलिन अरु नयन बिहीना |**
**राम रूप देखहिं किमि दीना ||**

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड -११५)

'मुकुर' का अर्थ है - शीशा | हमारा मन रूपी दर्पण (शीशा) मलिन है, भोग की वासनाओं से ढका हुआ है, इसलिए उसमें भगवान् का रूप या अपना स्वरूप दिखाई नहीं देता, चाहे अनेकों साधन करते रहो –

**नेम धर्म आचार तप ग्यान जग्य जप दान |**
**भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं रोग जाहिं हरिजान ||**

(श्रीरामचरितमानसजी, उत्तरकाण्ड – १२१)

इन सब साधनों से मानस रोग नहीं जाते हैं | इसीलिये भगवान् के रूप और आत्मस्वरूप का प्रतिफलन नहीं होता है, स्वरूपानुभूति नहीं होती है लेकिन जैसे - शीशा साफ़ करने के लिए उसे किसी चीज से रगड़ो, बार-बार मार्जन करो तो वह शीशा साफ़ हो जाता है और उसमें वस्तु का प्रतिफलन होने लगता है, उसी प्रकार चित्त शुद्ध होने पर उसमें भगवान् दिखाई पड़ते हैं क्योंकि चित्त के

पास ही हैं, उनको कहीं से आना-जाना नहीं पड़ता है | श्रीप्रह्लादजी कहते हैं –

**कोऽतिप्रयासोऽसुरबालका हरेरुपासने स्वे हृदि छिद्रवत्सतः ।**
**स्वस्यात्मनः सख्युरशेषदेहिनां सामान्यतः किं विषयोपपादनैः ॥**

(श्रीमद्भागवतजी ७/७/३८)

भगवान् हृदय में विराज रहे हैं, उनको बाहर से कहीं से बुलाना नहीं है, इसलिए वह सबसे निकट में हैं |

**अस प्रभु हृदयँ अछत अबिकारी |**

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड – २३)

श्रीभगवान् ने गीताजी में कहा है – सभी प्राणियों के हृदय में ईश्वर विराजमान हैं |

**'ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।'**
**'सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो'**

(श्रीमद्भगवद्गीताजी १८/६१, १५/१५)

इसलिए केवल चित्त पर जमा हुआ मैल हट जाये तो भगवान् का मिलन हो जाएगा | मैल हटने के बाद चित्त में उनका प्रतिफलन हो जाएगा | अतः कृष्ण-गुणगान चित्त रूपी शीशा को साफ़ करने के लिए चारों युगों में सबसे बड़ी औषधि है | कृष्ण-गुण गाओ तो अनादिकाल का मैल निश्चित दूर हो जाएगा लेकिन दिन-रात गाते चलो, उसमें प्रमाद मत करो |

**कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो |**
**मन को विषयों के विष से हटाते चलो ||**
**सुख में फूलो नहीं दुःख में रोओ नहीं |**
**रात-दिन कृष्ण का ध्यान भूलो नहीं ||**

संसार के विषय और सुख-दुःख' भगवान् से दूर करते हैं | अपना मन समान (एक-सा) रखो | दुःख में रो रहे हो, इसका अभिप्राय यह है कि तुम्हारे मन से कृष्ण चले गये, तभी दुःख याद आ रहा है, बिना कृष्ण को भूले नहीं रो सकते हो | सुख में हँसते हो, फूलते हो, इसका भी यही मतलब है कि कृष्ण मन से चले गये क्योंकि तुमको लड्डू खाने में मजा आता है, उसमें सुखी होते हो; इसी प्रकार किसी का मन उदास है तो कहता है कि मेरा अपमान हो गया | जब अपमान की याद आ रही है तो इसका यही तात्पर्य है कि कृष्ण मन से विदा हो गये, अब कृष्ण मन में नहीं हैं | सुख और दुःख दोनों को छोड़ना पड़ता है, भजन करना कोई खेल नहीं है |

**उनके चरणों में चित्त को लगाते चलो |**
**कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो ||**

अस्तु, **'चेतोदर्पणमार्जनम्'** का अर्थ है कि हमारे चित्त रूपी दर्पण पर जो मैल जमा हो गयी है, इसका मार्जन किया जाए | किसी चीज को माँजा जाता है तो बार-बार उसको रगड़ा जाता है, जैसे बर्तन को माँजते हैं तो उसको रगड़ा जाता है, वैसे ही चित्त रूपी दर्पण को माँजने के लिए दिन-रात कृष्ण को गाओ तो तुम्हारा चित्त रूपी शीशा स्वच्छ हो जाएगा और उसमें कृष्ण-रूप, कृष्ण-लीला, कृष्ण-धाम का प्रतिफलन होने लग जाएगा | इसलिए कृष्ण-संकीर्तन करने का पहला गुण है –

**'चेतोदर्पणमार्जनम्'** |

दूसरा गुण है – **'भवमहादावाग्निनिर्वापणम्' -** 'भव' का अर्थ है – संसार, यह संसार एक भवाटवी अर्थात् जंगल है, इसमें दावाग्नि लग गयी है | जंगलों में जो आग लगती है, उसको दावाग्नि कहते हैं | इस संसार में जो दावाग्नि लगी है, वह छोटी-मोटी आग नहीं, महादावाग्नि है और यह आज से नहीं, अनादिकाल से लगी है, उस दावाग्नि को कृष्णगुणगान बुझा देता है |

**जैसे ही मनुष्य भजन करता है वैसे ही उसकी आयु बढ़ती है। अकाल मृत्यु टल जाती है।**

# सबसे सरल-सरस 'श्रीभगवन्नाम'

**श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'नाम-महिमा' (२१,२२/५/२०१०) से संग्रहीत**

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी गौरी जी, मानमन्दिर, बरसाना

सृष्टि में सर्वत्र भगवान् की ही शक्ति (ऊर्जा) कार्य कर रही है, 'शक्ति' शब्द शक् धातु से अक्तिम् प्रत्यय करके बना है | कोई भी जड़-चेतन वस्तु शक्ति से ही सम्भव है, सम्पूर्ण सृष्टि शक्ति से बनी है | जैसे - तुम २० किलो. वजन उठा सकते हो तो इतनी शक्ति तुम्हारे में है, किसी गाड़ी के इंजन में ५ हॉर्सपावर की कार्य-शक्ति होती है तो किसी गाड़ी में १० हॉर्सपावर तक की क्षमता होती है, ये एक 'शक्ति' है | अतः कोई भी चीज कैसे सम्भव है? शक्ति से, वह शक्ति **भगवन्नाम** से ही आती है अर्थात् हरिनाम- संकीर्तन में ही सम्पूर्ण शक्ति समाहित है | 'श्रीभगवन्नाम' में सबसे बड़ी विशेष बात यह है कि इसके स्मरण करने में कोई बन्धन नहीं है, यहाँ तक कि उल्टा भी रटो, वाल्मीकिजी ने उल्टा जपा; ये भगवान् के नाम की सबसे बड़ी महिमा व विशेष कारण है | अन्य समस्त साधनों में विधि-निषेध है | अन्य समस्त मार्गों में 'नाम' को सभी विधि-निषेध से अतीत (अलग) रखा गया है | शिवजीभगवन्नाम से ही मुक्ति देते हैं –

**महामंत्र जोइ जपत महेसू। कासीं मुकुति हेतु उपदेसू॥**

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड- १९)

स्कंधपुराण में भी वर्णित है –

**पेयं पेयं श्रवण पुटके रामनामाभिरामं,**
**ध्येयं ध्येयं मनसि सतत् तारकं ब्रह्मरूपं |**
**जल्प्यं जल्प्यं प्रकृति विकृतौ प्रानिणां कर्णमूले, वीथ्यां**
**वीथ्यामटटि जटिलः कोऽपि काशीनिवासी ||**

(स्कन्दपुराण, काशीखण्ड)

कानों के दोना में नाम को पियो, नाम सुनों, अगर नहीं ले सकते हो तो सुनो, मान लीजिये कोई आलस्य, प्रमादवश नहीं 'नाम' ले सकता है तो जाकर के वहाँ सुने | कोई जटाधारी (शंकरजी) काशी की गलियों में घूमता है और जिसको भी मुक्त करता है, उसको भगवन्नाम दे देता है, ये प्रमाण है | शिव सहिंता में भी कहा गया है –

**रामनाम्ना शिवः काश्यां, भूत्वा पूतः शिवः स्वयम् |**
**स निस्तारयते जीवराशीन्काशीश्वरस्सदा ||**

(शिवसहिंता २/१४)

शिवजी काशी में भगवन्नाम से ही सबको मुक्ति देते हैं | अनेक इसके प्रमाण इसलिए दिये गए हैं कि कोई ये न समझे कि केवल पक्षपात की बात है | 'श्रीराम-स्तव' में भी कहा गया है-

**श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम् |**
**ब्रह्महत्यादि पापघ्नमिति वेद विदो विदुः ||**

(श्रीरामस्तवराज)

श्रीमद्भागवतजी में भी कहा गया है –

**ब्रह्महा पितृहा गोघ्नो मातृहाऽऽचार्यहाघवान्।**
**श्वादः पुल्कसको वापि शुद्ध्येरन् यस्य कीर्तनात्॥**

(श्रीमद्भागवतजी ६/१३/८)

जो बड़े-बड़े महापाप हैं, जैसे - माँ की हत्या, पिता की हत्या, गुरु की हत्या, ब्रह्म-हत्या, गौ-हत्या; ये सब भगवान् के नाम से ही नष्ट होते हैं और किसी साधन से नहीं | 'श्रीभगवन्नाम-संकीर्तन' ही सर्वश्रेष्ठ व सबसे सुगम साधन है, जिसको करने से गुरु की हत्या तक नष्ट हो जाती है, चांडाल, भील, जो मनुष्य का भी माँस बिना पकाये ऐसे ही पशु की तरह खा जाते हैं, उनको पुल्कस कहते हैं, ऐसी अत्यन्त अधम योनियाँ भी भगवान् के नाम से पवित्र हो जाती हैं | जीव की भगवन्नाम में आस्था न होने से वह इससे विमुख रहता है | अगर अखंड नाम का कीर्तन चले तो सुनने से ही कल्याण होगा लेकिन अधिकतर लोग अपने-अपने कमरे में सोते हैं, क्यों? उनको नींद ज्यादा प्यारी है, शरीर ज्यादा प्यारा है, शरीर की सुख-

सुविधायें ज्यादा प्यारी हैं, भगवन्नाम में न आस्था है, न रुचि है; इसका मूल कारण 'उस जीव का पाप' है –

**तुलसी पिछले पाप सों, हरि-चर्चा न सुहाय।**
**जैसे ज्वर के अंश सों, भोजन की रुचि जाय॥**

जैसे - किसी को बुखार हो, बुखार में उसको भोजन कड़वा लगता है, ये नियम है। हम लोगों को संकीर्तन के प्रति लगन नहीं है, सबको प्रयत्न करना चाहिए कि हम नहीं ले सकते हैं तो दिन-रात सुनते ही रहें क्योंकि बड़े-बड़े महापाप हैं, जो अनेक प्रायश्चित से नष्ट नहीं हो सकते, बड़े से बड़ा महापाप जैसे – गुरु-हत्या, माँ की हत्या, ब्राह्मण-हत्या आदि ये सब भगवन्नाम से नष्ट हो जाते हैं। इसकी महिमा साधारण जीव नहीं जानता है, देवगणों को कुछ प्राप्त है, जैसे - शिवजी का उदाहरण दिया या गणेशजी का दिया –

**महिमा जासु जान गनराउ। प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ॥**

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड- १९)

गणेशजी की जो प्रथम पूजा हुई; वह भगवन्नाम के कारण हुई। जब पृथ्वी की परिक्रमा की बात चली थी तो गणेश और कार्तिकेय में होड़ लगी थी कि कौन परिक्रमा जल्दी करता है। कार्तिकेयजी तो मोर पर बैठकर उड़ गये, लेकिन गणेशजी का चूहा कहाँ तक चल सकता है; तो नारदजी ने कहा कि रामनाम लिख करके परिक्रमा कर लो, तो भगवन्नाम के आश्रय से ही गणेशजी देवों में सर्वप्रथम पूज्यनीय हुए। आगे गोस्वामीजी कहते हैं –

**जान आदिकबि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू॥**

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड- १९)

श्रीभगवन्नाम से सरल साधन कहीं नहीं है, मरा-मरा कहो तब भी शुद्ध हो जाओगे। इसके आगे गोस्वामीजी कहते हैं –

**सहस नाम सम सुनि सिव बानी।**
**जपि जेई पिय संग भवानी॥**

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड- १९)

एकबार शिवजी भोजन करने जा रहे थे; उन्होंने पार्वतीजी को बुलाया, वे बोलीं कि अभी हमारा पाठ (विष्णुसहस्त्रनाम का नित्य पाठ करती थीं) बांकी है। पद्मपुराण में यह कथा विस्तार से है। गुरु वामदेवजी से पार्वतीजी ने विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ लिया था (जो लोग कहते हैं कि स्त्री का पति ही गुरु होता है, ये गलत है।) 'गुरु' स्त्रियों का भी होता है। ये बात पद्मपुराण में आती है

**इत्युक्तस्तु तया देव्या वामदेवो महामुनिः।**
**तस्यै मन्त्रवरम् श्रेष्ठं ददौ स विधिना गुरुः॥**

(देखा जाए तो सती स्त्री (जो भक्त हो) का विशुद्ध भक्त पति 'गुरु' हो सकता है; जो सती है। श्वेताश्वेतरोपनिषद् में कहा गया है – **"यस्य देवे परा भक्ति यथा देवे तथा गुरौ।"** जैसे भगवान् में अनन्य प्रीति होती है, उतनी ही गुरु में होनी चाहिए। गुरु की प्रीति में व्यभिचार है तो भगवान् की प्रीति में भी व्यभिचार है। कलियुग में सतीपन बहुत कम संभव है। पद्मपुराण और नृसिंहपुराण में वर्णन आता है कि पार्वतीजी ने वामदेवजी को गुरु बना करके सहस्त्रनाम सीखा। बिना भगवन्नाम के सतीधर्म भी सिद्ध नहीं होता है - **पतिव्रतानां सर्वासां रामनामानुकीर्तनम्।**

**ऐहिकामुष्पिकं सौख्यं दायकं सर्व शोभते॥**

(मानसपीयूष से)

सब साधनों का मूल भगवान् का नाम ही है। पार्वतीजी ने कहा कि हमारा पाठ बांकी है तो महादेवजी ने कहा – एक 'राम नाम' एक हजार विष्णुनाम के बराबर है; तो उसको ले करके तुरन्त भोजन करने बैठ गयीं। जब से शिवजी ने राम नाम की महिमा बताई तभी से पार्वतीजी नित्य 'राम नाम' को लेने लग गईं।

वह पिता, पिता नहीं है; वह दैव, दैव नहीं है; वह पति, पति नहीं है; जो मृत्यु से छूटने का रास्ता नहीं बताता है। जो भगवान् की शरणागति न बतावे, उसको छोड़ दो; यह भगवान् की आज्ञा है।

# श्रीधाम-संजीवनी 'नृत्याराधना'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'धाम महिमा'- (७/५/ २००६,१७/११/२०१३) ) से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका बालसाध्वी दया जी,दीदीजी गुरुकुल, मानमन्दिर, बरसाना

सारस्वत कल्प में ब्रज में यमुनाजी की दो धारायें थीं - एक धारा तो चीरघाट से गोकुल तक प्रवाहित होती थी, दूसरी धारा कुम्भनदासजी की जन्मभूमि यमुनावतो ग्राम से होकर गुजरती थी और आगे जाने पर दोनों धारायें मिल जाती थीं | दूसरी धारा जो गोवर्द्धन होकर श्यामढाक में प्रवाहित होकर जाती थी | इसके सन्दर्भ में महापुरुषों के पद का भी प्रमाण है – **"श्यामढाक तर छाछ अरोगत, लेकर थारी ठाड़ी ललिता | भोजन, व्यंजन केले के पातर में, चौंधा चपला सी ब्रज वनिता ||"** यह ग्राम्य लीला, वन की लीला है | थाली, कटोरा आदि पात्र नहीं हैं, अतः श्यामढाक में केले के पत्तों पर श्यामसुंदर भोजन आरोग रहे हैं | भागवत में भी उल्लेख है – **केचिद् पुष्पैः** ..... फलों-पुष्पों व पत्रों के पात्र बनाकर गोपबालकों सहित गोपाल छाक-लीला कर रहे हैं | सूरजमुखी के बड़े-बड़े पुष्प हैं, केले के पत्र हैं, उन्हीं पर सुस्वादु व्यंजनों को परोसा गया है – **भोजन, व्यंजन केले के पातर में, चौंधा चपला-सी ब्रजवनिता | निरखत अम्बुज मोहन के मुख, लोचन भये मानो मृग केसे चकिता | श्रीविट्ठल गिरिधरन अरोगत, निकट बहत कालिंदी सरिता ||** गोवर्द्धन के निकटवर्ती श्यामढाक, सामईखेड़ा आदि स्थलों में यमुनाजी प्रवाहित हो रही हैं | उपरोक्त पद का प्रमाण इसलिए दिया गया कि यदि कोई शंका करे कि वर्तमानकाल में तो इन स्थलों पर यमुना जी की धारा का दर्शन नहीं होता है | इसका उत्तर यही है कि सारस्वत कल्प में यमुनाजी गोवर्द्धन और उसके निकटवर्ती स्थलों से होकर प्रवाहित होतीं थीं | प्राकृत रूप तो परिवर्तित होता रहता है क्योंकि हम लोगों की प्राकृत आँखें हैं | जब भगवान् साक्षात् रूप से लीला करते हैं तब उनकी प्रिय वस्तुयें उनके आस्वादन हेतु उपस्थित रहती हैं | वस्तुतः श्रीठाकुरजी के नाम, रूप, लीला आदि के गुणगान से ही धाम का स्वरूप जीवित रहता है | हालांकि आजकल यह रसमयी धामोपासना (नृत्य-गान) घटती जा रही है | श्री बाबा महाराज जब ब्रज में आये थे तो उस समय बरसाने में श्रीजी के मन्दिर की समाज में सैकड़ों गोस्वामी बैठते थे, अब तो बहुत कम लोग बैठते हैं, वह भी एक बोझ समझकर बैठते हैं, अंत में थोड़ी देर के लिए आकर बैठ जाते हैं | अब 'रस' नाम की चीज लुप्त होती जा रही है | इसलिए धाम में नित्य आराधना करते हुए रहा जाए, यह महापुरुषों की आज्ञा है कि नाचो-गाओ, रसमय पद गाओ, इससे तुम्हारा चित्त रसमय बना रहेगा | यह अनुभव की भी बात है | कुछ वर्षों पहले राधारानी ब्रजयात्रा के बरसाना वापसी के समय अंतिम दिन ब्रज के पर्वतों का खनन करने वालों द्वारा किसी गाँव में गोली चला दी गयी थी | श्रद्धालु भक्तों ने श्रीबाबा को बताया कि आपके पीछे कुछ लोग गोली लेकर मारने के लिए खड़े हैं तो मान मन्दिर के परिकरजन श्रीबाबा के पीछे उनसे सट कर बैठ गये कि उन्हें गोली न लग जाये | उसी समय श्री बाबा ने स्वरचित '**राधे किशोरी दया करो**' पद गाना आरम्भ कर दिया तो मानमन्दिर की समस्त आराधिकाएँ अत्यंत उत्साह के साथ नृत्य करने लगीं | बंदूकधारी हमलावर भी हतप्रभ होकर देखते रह गये कि यह क्या हो रहा है

और वे गोली नहीं चला सके | जहाँ पर ऐसा हिंसा का वातावरण बन गया था, वहाँ रसमय नृत्य-गान से प्रेम की ऐसी लहरी चली कि उस दृश्य को देखकर अमेरिका से आयी एक भारतीय महिला ने यात्रा में ठाकुरजी के डोले के आगे नृत्य करने वाली मानमन्दिर की चालीस-पचास कन्याओं का पूजन किया और कहने लगीं – 'वाह ! ये कन्याएं तो साक्षात् भगवती स्वरूपा हैं |' ऐसे भीषण वातावरण में जहाँ गोली चलने वाली थी, वहाँ इस तरह से नृत्य-गान करना और फिर अचानक पूरा वातावरण बदलकर रसमय बन जाना, यह कोई साधारण बात नहीं है, यह एक साक्षात् भक्ति की शक्ति का अनुभव है | एक अँधा आदमी भी इसे देख और समझ सकता है | हाँ, जिसके हृदय में शून्य, अभाव, द्वेष और कालुष्य की कालिमा छाई हुई है, उसके लिए तो फिर कुछ नहीं है | उसके सामने भगवान् भी आ जायें तो भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा | जैसे शिशुपाल भगवान् कृष्ण को सामने देखते हुए भी द्वेषपूर्वक गालियाँ देता रहा, जिसका हृदय दूषित है, उसे तो रस भी विष दिखाई पड़ेगा किन्तु व्यास जी ने कहा है कि सरसता के साथ धाम में रहो | **नाच गाय रासहि मिले, कर वृन्दावन बास ||** देखो, तुम्हारे हृदय में रस की वृद्धि होती है कि नहीं | इसलिए धाम में इस तरह वास करना चाहिए कि अनवरत राधा-माधव की मंगलमयी लीलाओं के गान से अनुराग उत्पन्न हो जाये |

**एवंव्रतः स्वप्रियनामकीर्त्या जातानुरागो द्रुतचित्त उच्चैः ।**
**हसत्यथो रोदिति रौति गायत्युन्मादवन्नृत्यति लोकबाह्यः ॥**

(श्रीमद्भागवतजी११/२/४०)

नाम, गुण एवं लीला के गान से अनुराग उत्पन्न होगा, चित्त द्रवीभूत होगा | तुम प्रेम में पागल हो जाओगे | उन्माद में लोकबाह्य होकर नृत्य करने लग जाओगे | इसलिए उच्च स्वर से भगवन्नाम - गुण कीर्तन करो | यह रसरूपा भक्ति है –

**वाग् गद्गदा द्रवते यस्य चित्तं रुदत्यभीक्ष्णं हसति क्वचिच्च ।**
**विलज्ज उद्गायति नृत्यते च मद्भक्तियुक्तो भुवनं पुनाति ॥**

(श्रीमद्भागवतजी११/१४/२४)

जब चित्त द्रवित होता है तब भक्त कभी रोता है, कभी हँसता है | लज्जा छोड़कर वह भक्त फिर जिस गली से निकलता है तो उसे पवित्र करता चला जाता है | करोड़ों गंगायें उसके अंग से निकलती हैं –

**यत्पादसंश्रयाः सूत मुनयः प्रशमायनाः ।**
**सद्यः पुनन्त्युपस्पृष्टाः स्वर्धुन्यापोऽनुसेवया ॥**

(श्रीमद्भागवतजी १/१/१५)

गंगा बहुत दिन में पवित्र करेगी परन्तु ऐसे शुद्ध भक्त की प्रेम लहरी उसी क्षण पवित्र कर देती है |

**"हरि भक्तन आगे-पीछे हरि गंगा अकुलात | साधु चरन रज माँहि व्यास से कोटिन पतित समात ||"**

भक्त जब चलता है तो उसके पीछे गंगाजी और श्री हरि चलते हैं | भगवान् सोचते हैं कि ऐसे भक्त की चरण रज मेरे ऊपर पड़ जाये तो मैं पवित्र हो जाऊँ |

**निरपेक्षं मुनिं शान्तं निर्वैरं समदर्शनम् ।**
**अनुव्रजाम्यहं नित्यं पूयेयेत्यङ्घ्रिरेणुभिः ॥**

(श्रीमद्भागवतजी ११/१४/१६)

जो भक्त भगवत्प्रेम में नाचता-गाता हुआ चलता है, उसके पीछे शंकर आदि देवगण चलते हैं –

**चक्रं चक्री शूलमादाय शूली पाशं पाशी वज्रमादाय वज्री |**
**धावन्त्यग्रे पृष्ठतो बाह्यतश्च राधा राधा वादिनो रक्षणाय ||**

(राधिकोपनिषद्)

जब भक्त या भक्तों का समुदाय कृष्ण गुण गाता है तो वहाँ –

**गंगा सिन्धु कावेरी आवै,गोदावरी विलम्ब न लावै |**
**सर्वतीर्थ को वासा तहाँ, सूर हरि कथा होवै जहाँ ||**

इसलिए अनुपान यह है कि धाम में हम रहें तो सरसता के साथ रहें, भगवान् का खूब गुणगान होना चाहिए |

# 'भाव-भक्ति' से ही सर्वसाधनसिद्धि

श्रीबाबा महाराज के 'श्रीराधासुधानिधि-सत्संग' (४/५/१९९८) से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी कालिंदी जी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीकृष्ण रसिक हैं; 'रसिक' माने क्या होता है ? रस आस्वादने धातु से रसिक शब्द बनता है | "रस्यते आस्वाद्यते इति रसः |" ठक् प्रत्यय होकर के रसिक शब्द बनता है | जो चाखा जाता है, वह रस है, जो आस्वाद्य कराता है | 'रस' शब्द दोनों प्रकार से बनता है, कर्म में भी बनता है, कर्ता में भी बनता है; ये व्याकरण शास्त्र की प्रसिद्धि है | इसलिए श्रीकृष्ण दोनो हैं, विषय भी हैं और रस के आश्रय भी हैं | क्यों? सारे संसार में अधिकतर लोग इस बात को समझते हैं कि श्रीकृष्ण ही रस के विषय हैं; परन्तु यहाँ ब्रज में बहुत कम लोग जानते हैं कि रस की विषय श्रीलाड़लीजी हैं | श्यामसुन्दर की आसक्ति; जो कि गुप्तरूप से रसिकों ने गायी है, जिसको सारा संसार नहीं जानता | 'श्रीबाबामहाराज' रसिक महापुरुषों के जो पद गाते हुए समझाते हैं, इनके अति सुदुर्लभ भाव हैं, इनको जानने का अधिकारी भी संसार नहीं है कि किस तरह से श्रीकृष्ण अपनी आसक्ति को आसज्ज श्रीराधिकारानी में स्पष्ट करते हैं, अपनी सेवा से प्रकट करते हैं, अपनी रस की रीति से, प्रीति से प्रकट करते हैं; इसका महत्व तो केवल वही जान सकता है, जिस पर श्रीराधिकारानी की पूर्ण कृपा हो | बिना महत्व जाने तो छोटी से छोटी उपलब्धि भी नहीं होती है, आस्था या महत्व का ज्ञान बहुत आवश्यक है | देखो ! एक उदाहरण से समझें – श्रीभक्तमालजी में संत श्रीश्यामानन्दजी की कथा विस्तार से वर्णित है कि वह वृन्दावन के सेवाकुञ्ज के रासमण्डल में बुहारी लगाते थे और उनकी सेवानिष्ठा से प्रसन्न होकर श्रीराधिकारानी ने उनको दर्शन दिया | आस्था के सन्दर्भ में यह बहुत महत्वपूर्ण उदाहरण है, श्यामानन्दजी के ही शिष्य रसिकमुरारीजी थे | रसिकमुरारीजी बहुत बड़े महात्मा हुए, उनकी निष्ठा भगवद्भक्तों में थी; भक्त कोई भी हो, किसी भी सम्प्रदाय का हो, किसी भी वेश का हो, वह सबको भगवान् से बढ़कर के मानते थे | वे गौड़ीय थे, हृदयानन्दजी के शिष्य श्यामानन्दजी और श्यामानन्दजी के शिष्य रसिकमुरारीजी थे परन्तु वह बहुत विशाल हृदय के थे | जब उनके दादा गुरु को राधारानी की ओर से दंड दिया गया तो आज भी उनके सम्प्रदाय में दण्डोत्सव मनाया जाता है | उनके दण्डोत्सव को श्यामानन्दजी ने लिया और श्यामानन्दजी के दण्डोत्सव को रसिकमुरारीजी ने लिया | उस दंडोत्सव में बहुत संत आते थे और १२ दिन तक वह उत्सव चलता था | सारे ब्रज के सब साधुजन इकट्ठे होते थे और 'रसिकमुरारीजी' अपने आश्रम में कोई भी भक्त आता तो सर्वप्रथम उस भक्त का चरणामृत लेते थे, ये आस्था की बात होती है | नहीं तो प्रायः लोग अपनी पहचान के आदमी को तो दंडवत कर लेंगे या अपना कोई गुरु आ गया, या ताऊ गुरु, काका गुरु आया, या कोई बड़ा गुरुभाई आया तो उसे प्रणाम कर लेते हैं, बाकी से तो लोग मुँह टेढ़ा करके चल देते हैं, कोई मतलब नहीं रखते; इसको वैष्णवता नहीं कहते हैं | रसिकमुरारीजी सबका सम्मान करते थे, जितने भी संत आते थे; सबका चरणामृत लिया जाता था, हजार आओ, दो हजार आओ | सबका चरणामृत लेने के बाद जब कठौता भरके आता था; तो उस चरणामृत को वह (रसिकमुरारीजी) पेट भरकर पीते थे | उनका पहला नियम यही था, इसके बाद प्रसाद इत्यादि ग्रहण करते थे | भक्तों के चरणामृत में, भक्तों की चरणरज में, भक्तों की जूठन

में विचित्र शक्ति होती है | चैतन्य महाप्रभुजी ने प्रेम-प्राप्ति के ये तीन ही साधन बताये हैं | एक दिन उनके उत्सव में हजारों संत आये थे और उनका शिष्य जा करके सबके चरण धो रहा था | एक 'संत' कोढ़ी रोग वाले आ गये, कोढ़ उनके विकट था, गलितकुष्ठ था और पैर में ही था, पट्टी बँधी हुई थी | उस शिष्य के मन में उसके प्रति घृणा हो गयी कि अरे, इसको तो कोढ़ है, चू रहा है | चलो, इस संत का चरणामृत मत लो, क्या हानि है ? अरे, हजारों संत हैं, उनका ले लेंगे | रसिकमुरारीजी के शिष्य ने उन कोढ़ी संत को छोड़ करके आगे चल पड़े किन्तु उन्होंने बुरा नहीं माना, सच्चे संत थे वह, कोई उनसे माँगता तब भी अपना चरणामृत नहीं देते, क्योंकि वे अपने को बहुत दीन-हीन मानते थे, इसलिए अपना चरणामृत देने में उनको कष्ट होता था | देखो भाई ! सिद्धि किसी क्रिया में नहीं है, हमलोग सोचते हैं कि हम इतने दिन व्रत रख करके सिद्धि प्राप्त कर लेंगे, इतने दिन तपस्या करके, इतने दिन जप करके, इतने दिन अनुष्ठान करके सिद्धि प्राप्त कर लेंगे परन्तु ऐसा नहीं है क्योंकि सिद्धि तो भावना में होती है | **"यादृशी भावना यस्य तादृशी सिद्धि भवति |"**

भावना में ही सिद्धि होती है, बाहरी क्रिया में नहीं होती | पहले तुम हृदय का भाव देखो | अब प्रसंगानुसार जिस समय शिष्य चरणामृत लेकर के गुरुदेव (रसिकमुरारीजी) के पास पहुँचे, जब उन्होंने इसको पिया तो बोले – 'ओह ! आज स्वाद नहीं आया |' अब यह स्वाद दही की लस्सी का नहीं है, गुलाब के जूस का नहीं है, ये स्वाद दिव्य है, इसका सम्बन्ध भावना से होता है | वस्तुतः भावना ही भक्ति है और भावना ही सिद्धि है | लड्डू-पेड़ा में कोई स्वाद नहीं है | भगवान् के भक्तों का भाव ही साक्षात् श्रीकृष्ण रूप बनता है, वही सामने इष्ट की सिद्धि बनके आता है | हमारे जैसे मूर्ख लोग तो केवल क्रिया को ही सब कुछ समझते हैं, भाव को नहीं समझते | अब यह कोई भाव नहीं है कि रामदासजी, गोपालदासजी को देखकर के कुढ़ रहे हैं, गोपालदास, कृष्णदास को देखकर के कुढ़ रहे हैं, कोई ये नहीं समझता कि जहाँ भक्तलोग रहते हैं; वहाँ प्रेम की नदी प्रवाहित होनी चाहिए, वहाँ भी विष पैदा हो गया, अरे ! तुम्हारी भावुकता में पत्थर है | तुम भावुक बन ही नहीं सकते हो चाहे सारे जीवन साधु के बाप बन जाओ | जब श्रीरसिकमुरारीजी ने कहा कि इस चरणामृत में कोई स्वाद नहीं आया तो शिष्य घबड़ा गया क्योंकि वह जानता था कि हम कोढ़ी महाराज को छोड़ आये हैं | गुरुदेव (रसिकमुरारीजी) सिद्ध थे, बोले – 'आज स्वाद क्यों नहीं आया, बताओ ?' शिष्य तो काँप गया | गुरुजी ने पूछा - 'क्या तुमने किसी संत में दुर्भाव किया है, क्योंकि जरा से दुर्भाव से भी सिद्धि नष्ट हो जाती है |' वह हाथ जोड़कर के बोला - 'गुरुदेव ! एक संत के पाँव में पट्टी बँधी थी, कोढ़ था, इसलिए मैंने उन्हें छोड़ दिया |' गुरुदेव बोले – 'मूर्ख ! तभी तो स्वाद नहीं आ रहा है, अरे ! सब भगवान् हैं, तू किस दृष्टि से देख रहा है, तेरा कैसा भाव है ?' शिष्य दौड़कर के गया और उन्हीं कोढ़ी संत महाराज के पैरों में गिरकर क्षमा माँगी और चरणों को धोकर के उस चरणामृत को गुरुजी को दिया, तब गुरुदेव को पूर्ववत् दिव्य स्वाद का अनुभव हुआ | (ऐसी घटना विवेकानन्दजी के साथ भी घट चुकी है, उनके गुरुदेव रामकृष्ण परमहंसजी को कैंसर था |) वस्तुतः भावना ही शक्ति है, कोई क्रिया शक्ति नहीं है, भावहीन क्रिया व्यर्थ परिश्रम मात्र है; गधा, बैल आदि पशु भी बहुत बोझा ढोते हैं, दिनभर शारीरिक श्रम करते हैं लेकिन बिना भावना के करते हैं, अगर भावना से कोई भी जड़-चेतन जीव 'सेवा-कार्य' करे तो वह सिद्ध हो जाएगा अर्थात् प्रेममयी भक्ति आ जाएगी | कथनाशय यह है कि सम्पूर्ण सृष्टि में दिव्यातिदिव्य आनंदमय रस 'प्रेम तत्त्व' ही है, जिसका महत्व एकमात्र श्रीकृष्ण जानते हैं, तभी तो वे श्रीजी की सतत् सेवाराधना करते हैं; इसीलिए रसिकजन कहते हैं –

**"प्रीति की रीति रंगीलो ही जाने |"**

# भावना ही विशुद्ध भक्ति

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'गोपी-गीत'(३/११/१९९५) से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी कालिंदी जी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीमद्भागवत जी के ग्यारहवें स्कन्ध में लिखा है –

**"तस्माद् गुरुं प्रपद्येत जिज्ञासुः श्रेय उत्तमम् ।**
**शाब्दे परे च निष्णातं ब्रह्मण्युपशमाश्रयम् ॥"**

(श्रीमद्भागवतजी ११/३/२१)

## गुरु कैसा होना चाहिए ?

**'शाब्दे परे च निष्णातं ब्रह्मण्युपशमाश्रयम् ।'** शब्दब्रह्म में निष्णात व भगवत्प्रेमी | गुरु की शरण में जीव क्यों गया ? **'तत्र भागवतान् धर्मान् शिक्षेद् गुर्वात्मदैवतः'** वहाँ वह भागवत धर्मों को सीखता है | कैसे सीखता है ? अमायया अनुवृत्ति से |

**'अमाययानुवृत्त्या यैस्तुष्येदात्माऽऽत्मदो हरिः'**

(श्रीमद्भागवतजी ११/३/२२)

आचार्यों ने गोपीगीत के श्लोक

**"प्रणतदेहिनां पापकर्शनं, तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम् ।**
**फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं, कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥"**

(श्रीमद्भागवतजी, गोपीगीत-७)

इसमें 'कर्षण' शब्द का बहुत सुन्दर भाव दिया है कि भगवान् हमारे अनंत पापों को जो कि दबे हुए हैं, उनको भीतर से खींचते हैं और निकाल करके नष्ट कर देते हैं | यह उनकी शरणागतवत्सलता है | 'पापकर्षणम्' का अर्थ आचार्यों ने दिया - 'पापहन्त्री' | भगवान् अन्तःकरण में दबे हुए अनन्त पापों को भीतर से खींचकर निकालते हैं, क्यों निकालते हैं, क्योंकि निकालने से ही पाप का नाश होता है | 'पाप को प्रकट करने से उसका नाश होता है, ये श्रीधर स्वामीजी का भी मत है | एक जगह मुसलमानों ने अपने **'कुरान शरीफ़'** ग्रन्थ में लिखा है कि 'जब आदमी अपने पापों को छिपाता है, जितना नीचे छिपाता है, गाड़ता है तब शैतान क्या करता है – उतना ऊँचा बाँस गाड़ता है; जितना हमने पाप को नीचे छिपाया, शैतान उतना ऊँचा बाँस गाड़ता है और बाँस के ऊपर खड़े होकर ढोलक बजा-बजाकर चिल्लाता है कि इसने ये पाप किया, इसने ये पाप किया |' बहुत से लोग सोचेंगे कि ऐसा तो नहीं होता क्योंकि कितने ही लोग हत्या कर देते हैं, घूस देते-लेते हैं किन्तु उनका तो पाप प्रकट नहीं होता है, ऐसी बात नहीं है | हमलोग बाहरी छल-छिद्र, पैसे इत्यादि को देखकर प्रभावित हो जाते हैं | वस्तुतः पाप तो उसी क्षण मनुष्य की आत्मा को ढक करके अशांत कर देता है और उसी समय उसको निस्तेज कर देता है | इसका एक प्रमाण है कि रावण कितना प्रतापी था, जिसकी पाटी से काल बँधा हुआ था; यम, अग्नि, वरुण, कुबेर आदि बड़े-बड़े लोकपाल उसके दरबार में उसके सामने हाथ जोड़े खड़े रहते थे | ब्रह्मा, शंकर स्वयं उसके यहाँ पूजा लेने जाते थे, इतना बड़ा प्रतापी था लेकिन जिस समय वह सीताजी को चुराने जाता है तो धीरे-धीरे चलता है | गोस्वामीजी कहते हैं कि देखो, लोग कहते हैं कि पाप का फल बहुत देर में मिलता है; अरे, पाप का फल तुरंत मिलता है | जिस रावण के डोलने से पृथ्वी हिलती थी, सूर्य-चन्द्रमा भी डरते थे, वह सीताजी की चोरी करने गया तो चोर की तरह गया | गोस्वामी जी लिखते हैं –

**इमि कुपंथ पग देत खगेसा ।**
**रह न तेज तन बुधि बल लेसा ॥**

(श्रीरामचरितमानस, अरण्यकाण्ड- २८)

तुम कितने भी बड़े बन जाओ, प्रधानमन्त्री बन जाओ, राजा बन जाओ लेकिन जब तुम घूस लेने जाओगे तो

चोरी करोगे, छिपाओगे | पाप तो उसी समय मनुष्य को गिरा देता है | तुम बुरा कर्म करने चलोगे तो छिपाओगे, तुमको चोर बनना पड़ेगा, वह निर्भयता नहीं रहेगी | उसी समय पाप मनुष्य को गिरा देता है लेकिन जीव समझ नहीं पाता; वह समझता है कि हम कितने होशियार थे, पचास हजार रुपये घूस ले लिया और कोई जान नहीं पाया | अरे ! कोई जाने चाहे न जाने, जब तुमने चोरी से घूस लिया था तब तुम चोर बने थे, चोर बनना पड़ा था जब तुमने पाप किया था; तुमको चोर बन करके, छिप करके पाप करना पड़ा, इससे ज्यादा दंड क्या होगा ? मनुष्य अपने कर्मों को गाड़ता है, नीचे गाड़ता है, इतने नीचे गाड़ने की कोशिश करता है कि कोई संसार में जान न पाये; भगवान् भी नहीं जान पावें | हर दुष्कर्म को हर जीव जानता है, एक बच्चा तक जानता है; ये जीव की प्रवृत्ति है लेकिन यहाँ पर आचार्य कहते हैं कि भगवान् जान-बूझकर उन कर्मों का नाश कैसे करते हैं – उनको प्रकट करते हैं | कभी-कभी भगवान् स्वयं भक्त के ऊपर कलंक लगवा देते हैं, ये भक्तमाल में लिखा है, भगवान् चाहते हैं कि हमारा भक्त निर्मल बन जाये | इसलिए भगवान् स्वयं अपने भक्त की बुराई करवाते हैं, विरोध करवाते हैं; अतः जब मनुष्य अपने कर्मों को बहुत गाड़ता है, छिपाता है तो उसको भगवान् छलते हैं, प्रकट करते हैं | इसलिए 'कर्षण' शब्द का अर्थ दिया है कि भगवान् पापों को खींचते हैं और निकाल कर उनको नष्ट कर देते हैं | अतः 'पापकर्षण' शब्द का अर्थ श्रीधर स्वामी कर रहे हैं - 'पापहन्त्री' – पाप को बाहर निकालो, नाश हो जाएगा | पाप को छिपाओगे, तो पाप बढ़ेगा | जैसे - बैंक में रुपया जमा करो तो ब्याज बढ़ता है | पाप को छिपाओगे तो पाप बढ़ता है और उस पाप को बाहर खोल दो तो नष्ट हो जाता है | इसलिए 'पापकर्षण' का अर्थ आचार्यों ने बहुत सुन्दर किया है |

भावमयीभक्ति का साक्षात् स्वरूप 'भक्तों के चरित्र' हैं, जो श्रीभक्तमालजी में वर्णित हैं, उसमें एक कथा आती है –दक्षिण में कांचीपुरम् के पास कूरपुर है, कूरेश स्वामीजी वहाँ के राजा थे | राजा तो बहुत से होते हैं लेकिन इनके ऊपर लक्ष्मीजी और सरस्वतीजी की भी बड़ी कृपा थी; दोनों की कृपा होना कठिन होता है | लक्ष्मीजी की और सरस्वतीजी की एक साथ दोनों की कृपा का हो जाना बड़ा कठिन है क्योंकि कहते हैं कि विद्या में और लक्ष्मी में बाहर से बैर है | जो धनवान होता है वह प्रायः विद्वान् नहीं होता और जो विद्वान् होता है वह प्रायः धनवान नहीं होता, क्योंकि लक्ष्मीजी का ब्राह्मणों के प्रति श्राप है और वह श्राप बहुत प्राचीन है | एकबार सभी ऋषियों ने विचार किया कि ये त्रिदेव हैं, इनमें कौन बड़ा है, कौन अत्याधिक उपासनीय है तो इसका निर्णय कैसे हो ? (ये कथा श्रीमद्भागवत के दशम् स्कंध में आती है |) तो भृगुजी को ये काम सौंपा गया | भृगुजी सबसे पहले पितामह ब्रह्मा के पास गये, वहाँ ब्रह्माजी को प्रणाम नहीं किया तो वह नाराज हो गये और टेढ़ी दृष्टि से भृगुजी को देखने लग गये तो उन्होंने सोचा कि अरे, इनके मन में बड़ी जल्दी विकार (क्रोध) उत्पन्न हो गया | फिर महादेव के पास गये तो महादेव बोले कि आओ-आओ ! 'भाई-बन्धु' शब्द कहते हुए मिलने के लिए चले तो इन्होंने कहा कि दूर रहो; तुम्हारे मुंडमाला है, भस्म है, तुम कुमार्गगामी हो | तो ऐसे वाक्यों को सुनकर के शिवजी को क्रोध आया और बोले – 'अरे, ये मेरे प्रेम का आदर ही नहीं समझता है' ऐसा कहकर महादेवजी ने त्रिसूल उठाया और मारने के लिए दौड़े, **"शूलमुद्यम्य तं हन्तुमारेभे तिग्मलोचनः |" "पतित्वा पादयोर्देवी सान्त्वयामास तं गिरा |"** उसी समय सतीजी महादेवजी के चरणों में गिर पड़ीं और बोलीं कि हे नाथ ! आप इन्हें क्यों मारते हैं, ये आपके भाई हैं |

# कीर्तन-निष्ठ 'श्रीहिम्मतदासजी'

श्रीबाबामहाराज के एकादशी-सत्संग (२७/८/२००८) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी चंद्रमुखी जी, मानमन्दिर, बरसाना

रीवा रियासत में हिम्मतदास नामक एक श्रेष्ठ भक्त हुए हैं | इनका चरित्र गीताप्रेस के द्वारा भी प्रकाशित किया गया है | हिम्मतदासजी रीवा क्षेत्र में उसी प्रकार प्रसिद्ध भक्त हुए हैं; जैसे राजस्थान में मीराजी हुई हैं | भारत के अलग-अलग प्रान्तों में विशेष भक्त हुए हैं; जैसे महाराष्ट्र में नामदेवजी-ज्ञानेश्वरजी आदि प्रसिद्ध संत हुए हैं | रीवा एक रियासत है, जिसके पास में पन्ना नामक स्थान है, वहाँ धरती खोदने पर आज भी किसी-किसी को बहुमूल्य रत्न पन्ना मिल जाता है, जिससे करोड़ों रुपयों की प्राप्ति हो जाती है | उसी स्थान पर ये भक्त हिम्मतदास जी हुए हैं | पन्ना रियासत से पाँच कोस दूर बरायच नामक गाँव में इनका जन्म हुआ था | ये प्रतिदिन अपने गाँव से; पन्ना में स्थित ठाकुर युगल किशोर जी के मंदिर तक कीर्तन करते हुए अकेले जाते थे | प्रभात बेला में, दो-तीन बजे ही वह अपने घर से चल देते थे और मंगला आरती का दर्शन पन्ना स्थित इस मन्दिर में करते थे फिर वहाँ से लौटकर के अपने गाँव आते थे, रास्ते में घनघोर जंगल पड़ता था | हिम्मतदास जी का नियम था कि चाहे वर्षा हो, चाहे कुछ भी समस्या आ जाये, ठाकुर जी का दर्शन करने वह पन्ना अवश्य ही जाते थे | एक दिन की बात है कि दर्शन हेतु पन्ना जाते समय रास्ते में इन्हें चोरों का एक झुण्ड मिला जो कि जंगल में निवास किया करते थे और उन चोरों ने सोचा कि इन्हीं से आज की चोरी की शुरुआत करें, इसलिए चोरों ने इनको पकड़ लिया और पकड़ करके बोले – ला, जो कुछ तेरे पास माल है | ये बोले – भाई, मेरे पास कुछ नहीं है, तुम मेरी तलाशी लेकर देख लो | चोरों ने तलाशी लिया तो कुछ नहीं मिला क्योंकि हिम्मतदासजी भक्त थे, गरीब आदमी थे | चोरों ने देखा कि इनके पास कीर्तन करने की झाँझ है, अतः वे बोले – अच्छा, ये झाँझ दे जा हमको, कुछ तो बोहनी होनी चाहिए, ऐसा कहकर चोरों ने इनकी झाँझ छुड़ा लिया | उस समय हिम्मतदासजी ने प्रभु से प्रार्थना किया –

**चोरी सों मुख मोड़ियो, चोरन को नंदलाल |**
**हमरी वस्तु दिलाय के, चोरन करो निहाल ||**

(भक्त तो बड़े दयालु होते हैं | भगवान् को भक्त की बात माननी पड़ती है | भक्त जिसका मंगल सोच लें, उसका उद्धार जरूर होगा |) उन्होंने भगवान् से स्तुति करी – 'हे नाथ ! इन चोरों का मन ऐसा बदल दो कि ये चोरी करना छोड़ दें, हम आपसे यही माँगते हैं | इनको कोई सजा मत दो | मेरी झाँझ मुझको दिला दो क्योंकि मैं इसी से कीर्तन करता हूँ, इसी से नाचता हूँ |' जब हिम्मतदासजी ने इस तरह से प्रार्थना किया तो बस, दस कदम आगे जाते ही चोर अंधे हो गये | अब उन्हें दिखाई देना बंद हो गया तो वे एक-दूसरे के ऊपर गिरने–पड़ने लगे और आपस में कहने लगे – अरे भाई, ये क्या हुआ, हम तो अंधे हो गये, अब तो हम मरे, जिसकी झाँझ छुड़ाई थी, उसी को बुलाओ | वे चोर लगे चिल्लाने – 'अरे ओ भगतजी ! अपनी झाँझ ले जाओ |' हिम्मतदासजी आगे चले गये थे, इन्होंने मुड़कर देखा कि चोरों के चिल्लाने की आवाज आ रही है तो पूछा – क्या है ? चोर बोले – अरे भाई भगत ! अपनी झाँझ ले जाओ, हमसे गलती हो गई, हमें दिखाई नहीं दे रहा है, हम अंधे हो गये हैं, हमें बचाओ | हिम्मतदासजी चोरों के पास आये और उनसे अपनी झाँझ ली | चोर उनके पाँवों में गिरे और बोले – भाई, अब हमारी

आँख खोल दो, हम जनम भर चोरी नहीं करेंगे, हम सौगंध खाते हैं यदि दुबारा चोरी करें तो फिर से अन्धा कर देना | ये अपनी झाँझ ले जाओ और हमको हमारी आँख दे दो | हिम्मतदासजी ने कहा कि तुम लोगों को आँखों से तो दिखने लगेगा लेकिन तुम अब चोरी कभी मत करना | चोर बोले – अरे भाई भगतजी ! आज से पीछे हम कभी भी चोरी नहीं करेंगे | हमारी आँखों की रोशनी वापस कर दो | हिम्मतदासजी ने कहा – 'श्रीभगवान् का कीर्तन करो, वही प्रभु तुम्हें नेत्र-ज्योति वापस देंगे |' ऐसा कहकर उन्होंने चोरों से कीर्तन कराया | जितने भी चोर थे, वे सब संकीर्तन बड़े जोर-जोर से गाने लग गये –

**"जय राधे श्री राधे |**

**बरसाने वारी श्री राधे, जय राधे .....|"** कीर्तन करने से चोरों को दिखाई देने लगा और भक्त बन गए | हिम्मतदासजी को उपर्युक्त घटना के कारण देर हो गयी और जब तक वह मंदिर में पहुँचे, पट लग गया था | इनका यह नियम था कि भगवान् का दर्शन करने के बाद ही पानी पीते थे | जब इन्होंने देखा कि मन्दिर के पट बंद हो गये, ठाकुरजी के शयन का समय हो गया, अब दर्शन नहीं होंगे तो ये अधीर होकर रोने लग गये और प्रभु से बोले – हे नाथ ! अब आप दर्शन नहीं देंगे, शयन का समय हो गया है, बिना आपके दर्शन किये मैं घर कैसे जाऊँगा | वहाँ उस समय उन्होंने गान किया –

**कपटिन को लागे रहें, हिम्मतदास कपाट |**

**प्रेमिन के पग धरत ही, खुलत कपाट किवाट ||**

'हे नाथ ! तेरे दरवाजे बंद हैं | जो कपटी लोग होते हैं, उनको कभी तेरा दर्शन नहीं मिलता |' ये सच्चे भक्तों की वाणी है | हम सब लोग कपटी हैं; इसीलिए हमें भगवान् का दर्शन नहीं मिल रहा है | हृदय में से कपट हट जाये तो भगवान् सामने आ जाते हैं | इसीलिए हिम्मतदासजी ने गाया कि कपटियों को कभी भगवान् का दर्शन नहीं होता है | अगर प्रेमी भक्त आ जायेगा तो भगवान् के किवाड़ भी खुल जायेंगे, सब नियम टूट जायेंगे | जब हिम्मतदासजी ने ऐसा गाया तो शयन के समय मन्दिर में जो ताले लगे थे, तड़ाक से खुल गये और इन्होंने ठाकुर जी का दर्शन किया | इस घटना को देखकर के पुजारी जी और सभी लोग उस मंदिर के महंत गोविन्द दीक्षितजी के पास दौड़ के गये और बोले – महाराज ! गजब हो गया |

महंत जी ने पूछा – क्या हुआ भाई ?

पुजारी – अरे, मन्दिर के ताले-वाले टूट गये, साँकर और किवाड़ें अपने आप खुल गये | महंतजी - क्यों ?

पुजारी – बराइच गाँव वाला हिम्मतदास आया है | उसने ऐसा गाया कि सब ताले-वाले टूट गये | वहाँ के महन्त गोविन्द दीक्षितजी दौड़े और उसी समय उन्होंने पन्ना के राजा को खबर किया | उस समय रियासतें बहुत होती थीं | महंतजी ने राजा को खबर भेजा कि ऐसा भक्त आज तक नहीं आया | हम तो इसको आज तक गाँव का गँवार समझते थे लेकिन इसने तो सब नियम तोड़ दिये, शयन के ताले टूट गये, सांकर खुल गयीं | राजा साहब तीव्र गति से मन्दिर में आये, देखा तो सब बातें सच्ची थीं | घटना सही थी, अपने-आप ताले टूटकर के अलग पड़े हैं, किवाड़ अलग पड़ी है और वह प्रेम से भगवान् के आगे कीर्तन करते हुए नाच रहे हैं | राजा ने हिम्मतदासजी से कहा – 'महाराज ! गाँव ले लीजिये, मैं आपके नाम पर गाँव लिख देता हूँ, जमीन-जायदाद ले लीजिये |'

हिम्मतदासजी बोले- 'नहीं, मैं कुछ नहीं लूँगा |'

देखो ! इस त्याग का परिणाम, आप आश्चर्य करोगे कि त्याग के कारण हिम्मतदास जी के जीवन में आगे कितनी

चमत्कारिक घटना हुई | हमारे हृदय में त्याग नहीं है; इसलिए चमत्कार नहीं होता | उन्होंने कुछ नहीं लिया और अपने घर पर चले आये | इनसे ज्यादा भक्त इनकी स्त्री थी, इनकी स्त्री के पास भगवान् पहले पहुँचेंगे | अगर घर में स्त्री भक्त है तो क्या कहना ? हिम्मत दास जी घर पर आये और अपनी स्त्री से इन्होंने सब घटना सुना दी | वह बहुत ही प्रसन्न हुई और प्रसन्नता से बोली कि अच्छा किया, हमको गरीबी में ही सुख है, हमको तो गरीब ही रहना चाहिए | भक्तों के यहाँ भक्त बहुत आते हैं; भोजन करते हैं | 'भक्त' भक्तों को खिलाता-पिलाता है | इनके पास भक्त लोग आते थे | एक दिन बहुत लम्बी जमात (टोली) आ गयी तो ये उन भक्तों की प्रसाद की व्यवस्था करने के लिए बाजार में गये | बाजार में एक परमेश्वरी नाम का बनिया था | बहुत बड़ा सेठ था, ये परमेश्वरी सेठ से जाकर के बोले- भाई ! हमारे यहाँ कुछ रिश्तेदार आ गये हैं, चावल, आटा, दे दे | सेठजी बोले- माँगने चले आये हो, अभी पिछला तो तुमने चुकाया नहीं | अरे ! रिश्तेदार तुम्हारे कौन हैं, वही मुड़िया होंगे, उन्हें रिश्तेदार बताते हो, झूठ बोलते हो | ये आ जाते हैं और खाकर के चले जाते हैं | इन मुड़ियाओं को खिलाता है | हम ऐसे नहीं देंगे | हिम्मतदासजी दौड़ते-दौड़ते अपनी बहू के पास गये और बोले- 'अरी ! अब क्या करूँ ?' वह बोली – 'सब तो गहने बिक गये हैं, एक नथ बाकी है, नाक में जो पहनी जाती है, ये नथ ले जाओ |' हिम्मतदासजी बोले- 'वाह, वाह |' ऐसी ठोस भक्त थी इनकी स्त्री | देखो, उसको भगवान् पहले मिलेंगे; अगर स्त्री में भक्ति हो जाये तो वह पुरुषों से आगे चली जाती है | हिम्मतदासजी की स्त्री के सब गहने बिक गये थे, केवल एक नथ ही बाकी थी, वह भी उतारकर उसने दे दिया, अब हिम्मतदास जी सेठ के पास पहुँचे और बोले – 'भाई ! यह सोने की नथ ले ले, अब तो कुछ सामान देगा |' सेठ ने देखा कि यह तो सोने की नथ है | वह बोला- 'हाँ, ले जा भाई; जितना सामान चाहिए ले जा |' आटा, दाल, चावल सब दे दिया | हिम्मतदास जी नथ गिरवी रख करके घर में भोजन की सामग्री लेकर आये, साधुओं की पंगत हुई | दूसरे दिन हिम्मत दास जी की स्त्री गोबर थाप रही थी, गाय की सेवा कर रही थी क्योंकि भक्त लोग गौ सेवा करते हैं | गौसेवा सभी को करनी चाहिए | ३३ करोड़ देवता इसके शरीर में रहते हैं | केवल गाय की सेवा करने से ही भवसागर से पार हो जाओगे | भैंस की सेवा से भवसागर पार नहीं हो सकते, दूध के लोभ में लोग भैंस रखते हैं, उसका दूध पीने से भैंस की सी अकल (बुद्धि) हो जाती है | जब हिम्मत दास जी की स्त्री गोबर थाप रही थी तो उधर ठाकुर जी ने क्या किया, हिम्मतदासजी जैसा रूप बनाया | वह जिस प्रकार पाग-वाग बाँधते थे और फटी सी धोती पहनते थे, वैसा ही वेश धारण कर ठाकुर जी परमेश्वरी बनिया के पास पहुँच गये | सेठ बोला – अरे भाई हिम्मतदास ! क्या फिर से माँगने आ गये ? अब उसको क्या पता कि ये कौन से हिम्मतदास हैं, ये तो साक्षात् भगवान् हैं | छद्मवेषी हिम्मतदास बोले - 'नहीं, सेठ ! आज हम माँगने नहीं आये हैं, तू अपना पिछला सब हिसाब चुकता कर ले |' सेठ बोला- 'अरे भाई हिम्मतदास ! कहाँ से माल-पानी मिल गया ?' छद्मवेषी हिम्मतदास बोले - 'आज तेरा जितना भी हिसाब है, वह चुकता कर ले ब्याज-बट्टा समेत, पिछला भी जितना कर्ज था; वह सब चुका करके जो सोने की नथ थी, वह प्रभु ने ले लिया और असली हिम्मतदास को पता भी नहीं, वह तो कहीं जंगल में जाकर के कीर्तन कर रहे थे | ये प्रभु ही नकली हिम्मतदास बन करके और सब गिरवी रखा हुआ सामान तथा सोने की नथ छुड़ा करके घर पहुँचे जहाँ

हिम्मतदास जी की स्त्री गोबर थाप रही थी; तो उसको भी आश्चर्य हुआ, वह बोली - अरे ! तुम यहाँ कैसे आ गये, तुम तो जंगल में कीर्तन करने गये थे | छद्मवेषी हिम्मतदास बोले - 'हमारे मन में आज कुछ बात आयी तो हम कीर्तन छोड़कर बनिया से तेरा नथ छुड़ा के लाये हैं |' स्त्री बोली – 'अरे, तुमको पैसा कहाँ से मिल गया, बनिया का हिसाब तो बहुत पुराना था ?' प्रभु बोले- 'एक भगत आयो, दै गयो |' वह बोली - 'ऐसो कौन सो भगत आयो ?' छद्मवेषी हिम्मतदास बोले - 'अरे ! तू नथ ले ले; ज्यादा बात क्यों करे ?' वह बोली - 'हमारे तो दोनों हाथ गोबर में सने हुए हैं, मैं कैसे लूँ, तुम्ही पहना दो |' अब उसको क्या पता कि ये भगवान् हैं, वह तो अपना पति समझ रही है और उनसे कहती है कि तुम नथ पहना दो न | श्रीठाकुरजी मुस्कुराये और बोले- 'अच्छा तो मैं ही पहराऊंगो |' ऐसा कहकर ठाकुर जी ने उसकी नाक में नथ पहनायी | ये त्याग का फल है | देखो, सच्ची भक्ति जो होती है, उसको समर्पण कहते हैं | हम जैसे लोगों में समर्पण नहीं है, हम लोग पैसा को पकड़ लेंगे लेकिन उस स्त्री में इतना त्याग था कि सब कुछ प्रभु के लिए है | इधर भगवान् तो उसे नथ पहना के चले गये, अब वह गोबर थाप के घर में पहुँची, हाथ धोकर ठाकुर सेवा करके; रसोई बनाने को जाने लगी, तब तक हिम्मतदासजी आ गये | किवाड़ खटखटाया और बोले – 'अरी दरवाजा खोल ! उसने खोला, खोलते ही उन्होंने देखा उसके नाक में नथ | हिम्मत दास जी – 'अरे, ये नथ कहाँ से आयी ?' स्त्री – 'तुम लाये और कहाँ से आयी |' हिम्मत दास जी – 'मैं कैसे लाया, मैं तो वहाँ जंगल में कीर्तन कर रहा था |' स्त्री- 'अरे, तुम्ही लाये |' हिम्मतदासजी- 'झूठ बोल रही है |' स्त्री- 'तुमने ही हाथ से पहरायो |' हिम्मत दास जी – 'मैने हाथ से पहरायो, बिल्कुल झूठ बात है, अरे कोई ठग होगो |' स्त्री – 'मैं पहचानू नहीं ठग को, तुमने ही हाथ से पहरायी |' हिम्मत दास जी – 'झूठ बात है |' स्त्री – 'मैंने पूछी भी तुमसे कि पैसा कहाँ से आयो, तुमने कही कोई भगत लायो |' हिम्मत दास जी – 'अच्छा, पैसा भी चुक गयो |' स्त्री – 'हाँ, तुमने कही कि सब हिसाब बराबर है |' हिम्मतदासजी – 'अच्छा मैं पता लगाऊँ |' ऐसा कहकर वह दौड़ के बाजार गये और सेठ से बोले– 'अरे भाई परमेश्वरी सेठ !' सेठ बोला – 'अरे भाई, कैसे आयो, अभी तो तैने सब हिसाब चुकता कियो |' वह बोले- 'मैं कब आयो ?' सेठ बोला- 'ये देख, तूने सब हिसाब ब्याज-बट्टा समेत चुकता कियो और नथ छुड़ा के ले गयो |' हिम्मत दासजी – 'अरे भाई, मैं तो नहीं आयो |' सेठ- 'तो कौन आया था ?' अब वह समझ गये कि ये वही प्रभु हैं, जिसने चोरों से झाँझ छुड़ाई थी और जिसने हमारे लिए किवाड़ खोल दिये थे | प्रभु की असीम कृपा का स्मरण करते हुए हिम्मत दास जी वहीं से रोते-रोते चले और गाने लगे |

**दर्शन दो दीनानाथ, दर्शन दो |**
**मैं भी तो हूँ तेरा स्वामी, दीनबंधु उर अन्तर्यामी |**
**पापी हूँ या कुटिल अधम हूँ, जैसा भी हूँ मैं तेरा हूँ ||**
**आओ रे दीनानाथ दर्शन दो .....**
**दर्शन जो नहीं दोगे प्यारे, हे मनमोहन मुरली वाले |**
यदि तू दर्शन नहीं देगा तो मैं न खाऊँगा, न पीऊँगा, प्राण छोड़ दूँगा |
**बिना अन्न बिन पानी सुन लो, तड़प-तड़प छोडूं प्राणों को |**
**सुनो-सुनो रे दीनानाथ दर्शन दो.....**
जब हिम्मतदासजी ने ऐसी टेर लगायी तो भगवान् ने उनको दिव्य दर्शन दिये, जिसे देखकर उनका मन प्रेम-सिन्धु में डूब गया |

# गौ-अपराध का परिणाम

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'गौ-महिमा' (५/८/२०१२) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका बालसाध्वी शीतल जी, दीदीजी गुरुकुल, मानमन्दिर, बरसाना

कलियुग में पाप के बढ़ने से दूध-दही घट गये | भक्ति जब बढ़ती है तो निश्चय ही वहाँ गायें भी बढ़ती हैं | श्रीबाबा महाराज यहाँ कह रहे हैं कि आत्मप्रशंसा नहीं करनी चाहिए लेकिन हम कर रहे हैं, इसमें कोई हमारा प्रताप नहीं है | मान मन्दिर में सब लोग कीर्तन करते हैं, भक्ति करते हैं, आराधना करते हैं, इसलिए हमारे यहाँ गौवंश बढ़ रहा है, गौशाला की वृद्धि हो रही है | उसका मूल यही (आराधना/भक्ति) है | भक्ति बढ़ती है तो गायें बढ़ती हैं और पुष्ट होती हैं | भक्ति के साथ गायों का संबंध है, दूध-दही का संबंध है | आज प्राय: इस संसार में एक छटाक गाय का दूध भी असली नहीं मिलता है | मान मन्दिर की श्रीमाताजी गौशाला में बहुत से गौभक्त प्रात:काल आते हैं और नि:स्वार्थ-सेवा करते हैं, ये सब विशुद्धभक्ति का प्रताप है जबकि आज के युग में नकली दूध भी असली के रूप में मिलता है | कठोपनिषद् (१/१/१-४) में नचिकेता ने यही कहा था अपने पिता को कि आप बूढ़ी गायें दान में क्यों देते हैं, अच्छी गायों को दीजिये जिससे पितृश्वर (पुरखे) तर जायेंगे | नचिकेता की बात सुनकर पिता नाराज हो गये और बोले- 'मैं तो तेरे लिए अच्छी-अच्छी गायों को बचा रहा हूँ |' नचिकेता बोले – 'नहीं ! अच्छी गायों को दीजिये |'

वेदव्यास जी कहते हैं –

**गोकुलस्य त्रिसर्तस्य वसुधा प्रिय.....**

यदि गाय प्यासी है, पानी पीने जा रही है और उसको किसी ने रोक दिया तो वह ब्रह्महत्या के समान पाप हो जाता है | इसीलिए लोग गायों के लिए प्याऊ बनाते हैं, जलाशय बनाते हैं कि इनको स्वच्छ पानी मिले | राजा जनकजी जब मृत्युलोक को छोड़कर के परलोक गये तो उनको नरक के दरवाजे के पास से जाना पड़ा | जब नरक के निकट से निकले तो वहाँ के जितने भी प्राणी थे, जनक जी के अंग की पवित्र हवा के स्पर्श से उनका दु:ख घट गया | नरक में अनन्त कष्ट हैं, आग की भट्टी में जलाया जाता है, अनेकों प्रकार की दारुण यातनायें दी जाती हैं, मल-मूत्र में डुबाया जाता है | जनकजी जब नरक से होकर निकले तो सारा नरक सुगंध से भर गया | नरक के जितने जीव थे, सब सुखी हो गये और बोले – 'अरे कौन है, रुक जाओ, हमे तुम्हारे रुकने से सुख मिल रहा है, हमारा कष्ट दूर हो रहा है |' जनक जी ने पूछा – 'ये कौन लोग हैं जो चिल्ला रहे हैं ?' यमदूत बोले – 'ये लोग यातना पा रहे हैं क्योंकि इन्होंने पाप किया है और पापों को भोगने के लिए ये नरक में आये हैं | यहाँ ये अपने-अपने पापों का दण्ड भोग रहे हैं |' जनकजी ने पूछा कि ये तो अपने-अपने पापों को भोग रहे हैं पर मैंने क्या पाप किया था, जो मुझे नरक के दरवाजे तक लाया गया ? अब मैं यहाँ से जाऊँगा नहीं क्योंकि इन कष्ट पा रहे जीवों को सुख मिल रहा है | मैं जीवों को सुख देना चाहता हूँ, स्वयं भले ही कष्ट भोग लूँ परन्तु यहाँ से अब नहीं हटूँगा | उस समय धर्मराज स्वयं आये और उन्होंने कहा-

**एकदा चरन्ति गाववारयामि.....**

(किसी ने श्रीबाबा से पूछा था कि जो लोग गौशाला का पैसा खाते हैं, उनकी क्या गति होती है, उसका उत्तर यही है जैसा कि धर्मराज ने कहा -) जनक ! एक बार एक गाय चर रही थी और तुमने उसे हटा दिया था, उसी पाप से तुमको नरक के दरवाजे के दर्शन मिले हैं | केवल तुमने हटाया था और उसका इतना बड़ा दण्ड आपको भी मिल गया |